ओं धन्वनेत्यस्य (पायुर्ऋषिः त्रिष्टुप छन्दः धनुर्देवतं) १

पदार्थः – धनुष की स्तुति करते हैं १ मानुष धनुष वा प्रणाव से २ धेनु वा इन्द्रियों को ३,४ जीतें ५ मार्ग वा योग मार्ग को जीतें ६ धनुष से ७ उग्र ८ शत्रु वा काम आदि के संग्रामों को ९ जीतें १० दोनों प्रकार का धनुष ११ शत्रु वा काम के १२ मनोरथ भाव को १३ करता है १४ धनुष से १५ सब १६ दिशाओं को १७ जीतें ॥ ३९॥

वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रियꣳ सखायं परिषस्वजाना। योषेव शिङ्क्ते वितताधि धन्वञ्ज्या इयꣳ समने पारयन्ती ४०

१ इमम्। समने। पारयन्ती। ज्या। धन्वन्। अधि। वितता। योषा। शिङ्क्ते। प्रियम्। सखायम्। परिषस्वजाना। इत। वक्ष्यन्ती। इव। कर्णम्। आगनी गन्ति ॥ ४०॥

ओं वक्ष्यन्तीवेत्यस्य (पायुर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः ज्या देवता) १

पदार्थः ज्या की स्तुति करते हैं १ यह २ संग्राम में ३ विजय करती ४ ज्या वा बुद्धि ५ धनुष वा प्रणाव के ६ ऊपर ७ विस्तारित होती ८,९ स्त्री की समान १० अव्यक्त शब्द करती है ११ प्रिय १२ वाण रूप वा जीव रूप सखा को १३,१४ आलिंगन करती सी १५,१६ और कहना चाहती सी १७,१८ योधा के कान तक आती है ॥ ४०॥

ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रम्बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यताꣳ संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान् ४१

१ समना। योषा। इव। आचरन्ती। संविदाने। अभिज्ञाने। विष्फुरन्ती। इमे। आर्त्नी। उपस्थे। विभृताम्। इव। माता।

[१५]पुत्रम्। [१६]शत्रून्। [१७]अपि विध्यताम् ॥ ४१॥

ओंते आचरन्तीत्यस्य (पायुर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः धनुः कोटी देवते) १

पदार्थः - धनुष कोटी की स्तुति करते हैं १ एक पति में मन लगाने वाली २ ३ स्त्री की समान ४ आचरन वाली ५ परस्पर संकेत करती ६ शत्रुओं पर ७ टंकार करती ८ वे ९ ये १० धनुष कोटी वा इडा पिंगला नाडी ११ मध्य भाग वा सुषुम्णा नाड़ी में १२ वाण वा जीव रूप वाण को धारण करो १३ जैसे १४ माता १५ पुत्र को १६ और शत्रु वा काम आदि को १७ ताडन करो॥ ४१॥

वह्वीनांपितावहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति
समनावगत्य। इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः
पृष्ठेनिनद्धो जयति प्रसूतः ४२॥

[१]इषुधिः। वह्वीनाम्। पिता। अस्य। पुत्रः। वहुः। सुमना। [७]अव[८] गत्य। चिश्चा। कृणोति। च। पृष्ठे। निवद्धः। प्रसूतः। सर्वाः। सङ्काः। पृतनाः। जयति॥ ४२॥

ओंवह्वीनामित्यस्य (पायुर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः इषुधिर्देवता) १

पदार्थः इषुधि की स्तुति करते हैं १ तरकस वा मानस कमल २ वहुत वाण वा इन्द्रियों का ३ पालक है ४ इसका ५ पुत्र ६ वहुत संख्या वाल वा गुणों से वड़ रूप ७ संग्रामों को ८ जानकर ९ चिशब्द १० करता है ११ फिर १२ पृष्ठ पर १३ बंधा भी १४ आज्ञा दिया हुआ १५ सव योधाओं के गति स्थान १६ शत्रु सेना वा काम सेना को १७ जय करता है॥ ४२॥

रथेतिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथिः। अभीशूनां महिमानं पनायतमनः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयः ४३

रथे। तिष्ठन्। सुषारथिः। यत्र। यत्र। कामयते। पुरः। वाजिनः नयति। पश्चात्। रश्मयः। मनः। अनु। यच्छन्ति। अभीशूनाम्। महिमानम्। पनायत॥ ४३॥

ओं रथेतिष्ठन्नित्यस्य (पायुर्ऋषिः जगती छन्दः सारथ्यादयो देवताः) १

पदार्थः – आधे मंत्र से सारथि की और आधे से वाग डोरों की स्तुति करते हैं १ रथ में २ बैठता ३ अच्छा सारथि ४ जहां ५ जहां ६ चाहता है ७ आगे वर्त्तमान ८ घोड़ों को ९ पहुंचाता है १० पीछे वर्त्तमान होती ११ वागडोर १२ अश्व के चित्त को १३ वशवर्त्ती करती है १४ हे मनुष्यो वागडोरों की १५ महिमा को १६ स्तुत करो॥ ४३॥

अथाध्यात्मम् – १ योग रथ में २ बैठा ३ मारण ४, ५ जहां जहां ६ चाहता है ७ आगे वर्त्तमान ८ इन्द्रियों को ९ पहुंचाता है १० पीछे वर्त्तमान होती ११ बुद्धि वृत्तियां १२ मन को १३ वशवर्त्ती करती हैं हे वाक् आदि ऋत्विजो १४ बुद्धिवृत्तियों की १५ महिमा को १६ सराहो॥ ४३॥

तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोश्वा रथेभिः सह वाजयन्तः। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्ति शत्रूँरनपव्ययन्तः॥ ४४॥

वृषपाणयः। तीव्रान्। घोषान्। कृण्वते। रथेभिः। सह। वाजयन्तः। प्रपदैः। अमित्रान्। अवक्रामन्तः। अनपव्ययन्तः। अश्वाः। शत्रून्। क्षिणन्ति॥ ४४॥

ओं तीव्रान्नित्यस्य (पायुर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः अश्वा देवताः) १

पदार्थः घोड़ों की स्तुति करते हैं १ अश्ववार पुरुष २, ३ जय जय नाम तीव्र शब्दों को ४ करते हैं ५, ६ रथ सहित ७ चलते ८ खुरों से ९ शत्रुओं को १० आक्रमण करते ११ समर्थ १२ घोड़े १३ शत्रुओं को नाश करते हैं॥

अथाध्यात्मम् –१ वृद्धि वृत्तियां २,३ कामादि को जीतो जीतो ऐसे शब्दों को ४ करती हैं ५,६ अष्टांग योग रथों के साथ ७ चलती ८ चरनों से ९ कामादि को १० आक्रमण करती ११ विषय वासना से नष्ट न होती १२ ब्रह्म भाव को प्राप्त इन्द्रियां १३ काम आदि को १४ नाश करती हैं ४४

रथवाहनं हविरस्य नाम यत्रायुधं निहितमस्य वर्म। तत्रा रथमुप शग्मं सदेम विश्वाहा वयं सुमनस्यमानाः ॥ ४५॥

अस्य। रथवाहनम्। नाम। हविः। यत्र। अस्य। वर्म। आयुधम्। निहितम्। तत्र। आ। विश्वाहा। सुमनस्यमानाः वयम्। शग्मम्। रथम्। उपसदेम॥ ४५॥

ॐ रथवाहनमित्यस्य (पायुऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः रथो देवता) १

पदार्थः –१ इस रथ का २ रथ वाहन ३ नाम ४ हविर्धान शकट है ५ जिस शकट में ६ इस योधा का ७ कवच ८ आयुध ९ स्थापित है १० उस ११ शकट में १२ सदा १३ अनुकूल चित्त वाले १४ हम १५ सुख दाता १६ रथ को १७ स्थापन करें॥ ४५॥

अथाध्यात्मम् –१ इस योग रथ का २ शरीर ३ नाम ४ हविर्धान शकट है ५ जिस शरीर में ६ इस जीवात्मा का ७ मंत्रमय कवच ८ और ज्ञानरूप शस्त्र ९ स्थापित है १० उस ११ शरीर रूप शकट में १२ सदा १३ अनुकूल चित्त वाले १४ हम वाक् आदि ऋत्विज १५ ब्रह्मानंद दाता १६ योग रथ को स्थापन करें॥ ४५॥

स्वादुषꣳसदः पितरो वयोधाः कृच्छ्रेश्रितः शक्तीवन्तो गभीराः। चित्रसेना इषुबला अमृध्राः सतोवीरा उरवो व्रातसाहाः ४६

स्वादुषंसदः पितरो वयोधाः कृच्छ्रेश्रितः शक्तीवन्तो गभीराः। चित्रसेना इषुबला अमृध्राः सतोवीरा उरवो व्रातसाहाः॥ ४६॥

स्वादुसंसदः[1]। पितरः[2]। वयोधाः[3]। कृच्छ्रेश्रितः[4]। शक्तीवन्तः[5]। गभीराः। चित्रसेनाः। इषुबलाः। अमृध्राः। सतोवीराः। उरवः। व्रातसाहाः॥ ४६॥

ओं स्वादुषंसद इत्यस्य (पायुर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः रथगोपा देवताः) १

पदार्थः – रथ गोपों की स्तुति करते हैं १ सुख से बैठने वाले २ रक्षक ३ अन्न वा आयुध के धारण करने वाले ४ कष्ट में सेवन योग्य ५ सामर्थ्य वा आयुधधारी ६ गंभीर बल वा बुद्धि वाले ७ नाना प्रकार की सेना वाले ८ बाण रूप बल वाले ९ कठिनां गवा उग्र शासन वाले १० विद्यमान बल के प्रेरक ११ बिशाल वा पृथु जघनो रस्क १२ भूर समूहों को जीतने वाले अगले मंत्र से सम्बंध है॥ ४६॥

अथाध्यात्मम् – योग रथ के रक्षक कमलस्थ देवताओं की स्तुति करते हैं १ अपने भोग्य कमल पर ही विराजमान २ जीवात्मा के रक्षक कमलस्थ देवता ३ जीव सुपर्णी के धारक ४ संसार दुःख के होने पर आश्रयण योग्य ५ निज शक्ति से युक्त ६ गणेश ब्रह्मा विष्णु शिव देव समूह ज्योति स्वरूप नाम षट् रूप वाले ७ नाना प्रकार की सेना वाले ८ जीवात्मा रूप बल वाले ९ शान्ति के दाता १० साधु के प्रेरक ११ महान १२ कामादि समूह के जेता हैं॥ ४६॥

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा। पूषा नः पातु दुरिताद् ऋतावृधो रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत॥ ४७॥

ब्राह्मणासः[1]। सोम्यासः। ऋतावृधः। पितरः। नः। शिवे[6]। अनेहसा। द्यावापृथिवी। पूषा। नः। पातु। आ। दुरितात्। रक्ष। किः। अघशंसः। नः। मा। ईशत॥ ४७॥

ओं ब्राह्मणास इत्यस्य (पायुर्ऋषिः स्वराट् त्रिष्टुप् छन्दः रथ गोपा दे०)

पदार्थः – १ ब्रह्म ज्ञानी २ सोम पान योग्य ३ यज्ञ की वृद्धि करने वाले ४ पितर तथा ५ हमारे ६ कल्याण कारी ७ अपराध निवर्त्तक ८ पृथिवी स्वर्ग ९ सूर्य १० हम को ११ रक्षा करो १२ हे विष्णो १३ पाप से १४ रक्षा करो १५ कोई १६ दुष्ट समूह १७ हमारे ऊपर १८, १९ ऐश्वर्य को मत पाओ ॥ ४७॥

अथाध्यात्मम् – १ ब्रह्म रूप २ आत्म प्रति विंब के पान कर्त्ता ३ यज्ञ की वृद्धि करने वाले ४ कमलस्थ देवता तथा ५ हमारे ६ कल्याण कारी ७ पाप निवर्तक ८ मन भृकुटी तथा ९ अंतर्यामी १० हम को ११ रक्षा करो १२ हे महानारायण १३ पाप से १४ रक्षा करो १५ कोई १६ कामादि समूह १७ हमारे ऊपर १८, १९ ऐश्वर्य मत पाओ ॥ ४७॥

सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो गोभिः सन्नद्धा पतति प्रसूता। यत्रा नरः सञ्च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यᳫं सन् ४८

सुपर्णं। वस्ते। अस्याः। दन्तः। मृगः। गोभिः। सन्नद्धा।
प्रसूता। पतति। च। यत्र। नरः। सन्द्रवन्ति। च। विद्रवन्ति
तत्र। इषवः। अस्मभ्यम्। शर्म। आयसन्॥ ४८॥

ओं सुपर्णमित्यस्य (पायुर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः इषुर्देवता) १

पदार्थः – जो वाण १ श्रेष्ठ पक्षि पिच्छ को २ धारण करता है ३ इस वाण का ४ फल ५ शत्रुओं का अन्वेषक है ६ और किरणों से ७ सन्नद्ध ८ धनुषधारी से प्रेरित होता ९ गिरता है अर्थात् शत्रु सेना में जाता है १० और ११ जहां पर १२ योधा १३ जाते हैं १४ और १५ नाना प्रकार की गति करते हैं १६ उस युद्ध में १७ वाण १८ हमारे लिये १९ सुख को २० दो ॥ ४८॥

अथाध्यात्मम् - जोजीव रूप वाण १ मन रूप सुपर्ण को २ धारण करता है ३ इसका ४ फल ५ मारने के लिये काम आदि का अन्वेषक है वह जीवरूप वाण ६ इन्द्रियों से ७ सन्नद्ध ८ आत्मा से प्रेरित होता ९ काम सेना पर गिरता है १० और ११ जहां पर १२ माण १३ चलते हैं १४ और १५ नाना प्रकार की गति करते हैं १६ उस समाधि में १७ जीवात्मा की किरणें १८ हम वाक् आदि ऋत्विजों के लिये १९ सुख को २० दो ॥ ४८॥

ऋजीते परिवृङ्धि नोऽश्मा भवतु नस्तनूः सोमोऽअधि ब्रवीतु नोऽदितिः शर्म यच्छतु ॥ ४९ ॥

ऋजीते । नः । परि वृङ्धि । नः । तनूः । अश्मा । भवतु । सोमः । नः । अधि ब्रवीतु । अदितिः । शर्म । यच्छतु ॥ ४९॥

ओं ऋजीत इत्यस्य (पायुर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः इषुर्देवता) १

पदार्थः - १ हे ऋजु गामी वाण २ हम को ३ त्यागो अर्थात् हम पर मत पड़ो ४ हमारा ५ शरीर ६ पाषाण तुल्य दृढ़ ७ होओ ८ ईश्वर ९ हम को १० अधिक कहो ११ अखंडिता भगवती १२ सुख १३ दो ॥ ४९॥

अथाध्यात्मम् - १ हे ऋजु गामी जीव रूप वाण २ हम वाक् आदि ऋत्विजों को ३ त्यागो अर्थात् पीड़ा मत दो ४ हमारा ५ आत्मा ६ सूर्य रूप ७ होओ ८ त्रिदेव रूप धारी महानारायण ९ हमारे लिये १० महा वाक् को कहो ११ परा शक्तिः १२ परमानन्द को १३ दो ॥ ४९॥

आजङ्घन्ति सान्वेषाञ्जघनाँ२॥ उपजिघ्नते । अश्वाजनि प्रचेतसोऽश्वान्त्समत्सु चोदय ॥ ५० ॥

अश्वाजनि । समत्सु । प्रचेतसः । अश्वान् । चोदय । एषाम् । सानु । आजङ्घन्ति । जघनान् । उप जिघ्नते ॥ ५०॥

ओं आजङ्घन्तीत्यस्य (पायुर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः कशा देवता) १

पदार्थः – कशा की स्तुति करते हैं १ हे कशे २ संग्रामों में तुम ३ शूर मन वाले ४ घोड़ों को ५ जय के लिये प्रेरित करो ६ इन घोड़ों की ७ सानु तुल्य मांसो पचित अंगों को ८ ताड़न करते हैं ९ कटि भागों को १० ताड़न करते हैं ॥ ५० ॥

अथाध्यात्मम् – १ हे इन्द्रियों की प्रेरक योग लक्षणा बुद्धि २ काम आदि के संग्रामों में ३ ज्ञान स्वरूप ४ इन्द्रियों को ५ प्रेरणा करो ६ इन इन्द्रियों के ७ शिरों को ८ ताड़ना करते हैं ९ कटि प्रदेशों को ताड़ित करते हैं ॥ ५० ॥

अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांसम्परि पातु विश्वतः ५१

विश्वा। वयुनानि। विद्वान्। पुमान्। हस्तघ्नः। पुमांसम्। विश्वतः। परि। पातु। ज्यायाः। हेतिम्। परिबाधमानः। बाहुम्। पर्येति। इव। अहिः। भोगैः ॥ ५१ ॥

ॐ अहिरिवेत्यस्य (पायुऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः हस्तघ्नो देवता) १

पदार्थः – हस्तघ्न की स्तुति करते हैं १ सब २ ज्ञानों का ३ ज्ञाता ४ शूर ५ खेटक वा प्रकोष्ठत्राण ६ मुझ को ७ सब ओर से ८ रक्षा करो जो कि ९ ज्या के १० प्रहार को ११ निवारण करता १२ भुजा को १३ वेष्टन करता है १४ जैसे १५ सर्प १६ अपने देह से हस्त आदि को वेष्टित करता है ॥ ५१ ॥

अथाध्यात्मम् – १ सब २ ज्ञानों का ३ ज्ञाता ४ अन्तर्यामी पुरुष ५ समाधि क्रिया कारण शक्ति का रक्षक होता ६ उत्थान अवस्था में देह व्यापक मुझ को ७ सब ओर से ८ रक्षा करो ९ जो अंतर्यामी बुद्धि के १० अस्त्र को ११ निवारण करता १२,१३ हस्त ग्रहण अर्थात् सहायता करता है १४

जैसे १५ आदिशेष १६ फनों से १७ ब्रह्मांड को रक्षा करते हैं॥ ५१॥

वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धो असि वीडयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि ५२

वनस्पते। वीड्वङ्गः। भूयाः। अस्मत्। सखा। प्रतरणः। सुवीरः। गोभिः। सन्नद्धः। असि। वीडयस्व। ते। आस्थाता। जेत्वानि। हि। जयतु॥ ५२॥

ओं वनस्पत इत्यस्य (पायुर्ऋषिः भुरिगार्षी पंक्तिश्छन्दः रथो देवता) १

पदार्थः—१ हे वनस्पति विकार काष्ठमय रथ २ दृढ़ अंग ३ हो ४ हमारा ५ सखारूप ६ संग्राम पारगामी ७ शुभ रथी वाला ८ रत्नों की किरणों से ९ सन्नद्ध १० हो ११ आप को स्तम्भित कर १२ तेरा १३ आरोढा रथी १४ जेतव्य पदार्थों को १५ ही १६ जय करो न कि अजेतव्यों को॥ ५२॥

अध्यात्मम्—१ हे संसार वृक्ष रूप ब्रह्माण्ड स्वरूप योगरथ २ दृढ़ अंग ३ हो ४ हमारा ५ सखा ६ काम संग्राम तरण शील ७ और आत्मा को रथी रखने वाले और ८, ९ इन्द्रियों से सम्बद्ध १० हो ११ आप को स्तंभित करो १२ तेरा १३ आत्मा १४ जेतव्य को १५ ही १६ जीतो न कि अजेतव्यों को ५२

दिवः पृथिव्याः पर्योज उद्भृतं वनस्पतिभ्यः पर्याभृतं सहः। अपामोज्मानं परि गोभिरावृतमिन्द्रस्य वज्रं हविषा रथं यज ५३

दिवः। पृथिव्याः। परि। उद्भृतम्। ओजः। वनस्पतिभ्यः। पर्याभृतम्। सहः। अपाम्। ओज्मानम्। गोभिः। पर्यावृत्तम्। इन्द्रस्य। वज्रम्। रथम्। हविषा। यज॥ ५३॥

ओं दिव इत्यस्य (पायुर्ऋषिः निचृदार्षी जगती छन्दः रथो देवता) १

पदार्थः-हे अध्वर्यु वा स्नान चक्षुतम १ स्वर्ग २ पृथिवी से ३ उद्धन ४ तेज स्वरूप ५ वृक्षों से ६ आहत ७ बल रूप ८, ९ जलों के सार १० किरणों से ११ वेष्टित १२, १३ वज्र से उत्पन्न वा यजमान के ज्ञान शस्त्र से निर्मित १४ रथवा योग रथ को १५ हवि वा व्यष्टि लिंग शरीर से १६ यजन करो ॥ ५३ ॥

इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकम्मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः। सेमान्नो हव्यदातिञ्जुषाणो देव रथ प्रति हव्या गृभाय ५४

देवरथ। इन्द्रस्य। वज्रः। मरुताम्। अनीकम्। मित्रस्य। गर्भः वरुणस्य। नाभिः। सः। नः। इमाम्। हव्यदातिम्। जुषाणः। हव्या। प्रति गृभाय ॥ ५४ ॥

ॐ इन्द्रस्येत्यस्य (पायुर्ऋषिः निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः रथो देवता) १

पदार्थः-१ हे देवरथतम २, ३ वज्र से उत्पन्न वा यजमान के ज्ञान वज्र रूप ४ समष्टि प्राणों के ५ समूह ६ सूर्य के ७ ब्रह्माण्ड रूप ८ परमेश्वर के ९ नाभि से उत्पन्न ब्रह्माण्ड रूप हो १० वह तुम ११ हमारे १२ इस १३ हविर्दान को १४ सेवन करते १५ हवि वा लिंगावयवों को १६ ग्रहण करो ॥ ५४ ॥

उपश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं जगत्। स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अप सेध शत्रून् ॥ ५५ ॥

दुन्दुभे। पृथिवीम्। उत। द्याम्। उपश्वासय। विष्ठितम्। जगत् पुरुत्रा। ते। मनुताम्। सः। इन्द्रेण। देवैः। सजूः। दूरात्। दवीयः। शत्रून्। अपसेधय ॥ ५५ ॥

ॐ उपश्वासयेत्यस्य (पायुर्ऋषिः। भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छन्दः दुन्दुभिर्दे) १

पदार्थः—१ हे दुन्दुभे २ पृथिवी ३ और ४ अन्तरिक्ष को ५ शाब्दित करो ६ नाना प्रकार से स्थित ७ स्थावरजंगम रूप विश्व ... ८ बहुत प्रकार से ९ तुझको १० जानें ११ वह १२ इन्द्र १३ और देवताओं से १४ प्रीतियुक्त तुम १५ बहुत दूर भी १६ शत्रुओं को १७ हटादो ॥ ५५ ॥

अथाध्यात्मम्—१ हे अनाहत शब्द कर्त्ता २ हार्दान्तरिक्ष ३ और ४ भृकुटि को ५ शाब्दित करो ६ नाना प्रकार से स्थित ७ इन्द्रियां ८ बहुधा अर्थात् दस प्रकार से ९ तुझे १० जानें ११ वह १२ आत्मा १३ और इन्द्रियों से १४ प्रीति युक्त तुम १५ अति दूर भी १६ काम आदि को १७ हटाओ ॥ ५५ ॥

आक्रन्दय बलमोजो न आधा निष्टनिहि दुरिता बाधमानः। अप प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व ॥ ५६ ॥

दुन्दुभे। बलम्। आक्रन्दय। नः। ओजः। आधाः। दुरिता। बाधमानः। निष्टनिहि। इतः। दुच्छुनाः। अप प्रोथ। इन्द्रस्य। मुष्टिः। असि। वीडयस्व ॥ ५६ ॥

ओं आक्रन्दयेत्यस्य (पायुर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः दुन्दुभिर्देवता) १

पदार्थः—१ हे दुन्दुभे २ शत्रु सेना को ३ रुलाओ ४ हमको ५ तेज ६ दो ७ पापों को ८ निरादर करते ९ शब्द करो १० हमारी सेना के सकाश से ११ श्वान सदृश शत्रुओं को १२ नाश करो १३ क्योंकि तुम इन्द्र की १४ मुष्टि १५ हो इस कारण हम को १६ दृढ़ करो ॥ ५६ ॥

अथाध्यात्मम्—१ हे अनाहत शब्द कर्त्ता २ तुम काम सेना को ३ रुलाओ ४ हम वाक् आदि ऋत्विजों के ५ तेज को ६ दो ७ पापों को ८ निरादर करते ९ अनाहत शब्द करो १० इस ब्रह्मपुर शरीर से ११ श्वान सदृश क्रोध आदि को १२ नाश करो १३ क्योंकि तुम यजमान को १४ ब्रह्माभि-

ष्यु महेश्वर्य और शक्ति की प्रापक हो इस कारण आत्मा को दृढ़ करो॥ ५६॥

आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीति। समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरोऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु॥ ५७॥

इन्द्र। अमूः। आ। अज। प्रति। आ। वर्तय। इमाः। केतुऽमत्। दुन्दुभिः। वावदीति। सम्। अश्वऽपर्णाः। चरन्ति। नः। नरः। अस्माकम्। इन्द्र। रथिनः। जयन्तु॥ ५७॥

ओं आमूरजेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः भुरिगार्षीपंक्तिश्छन्दः इन्द्रो देवता॥

पदार्थः—१ हे परमेश्वर २ तुम इन शत्रु सेनाओं को ३ सब ओर से ४ हटाओ ५ जिस कारण दुन्दुभि ६ बुद्धि पूर्वक ७ अत्यन्त शब्द करती है ८ इन हमारी सेनाओं को ९ जय के साथ लौटाओ १० और हमारे ११ अश्व समान चलने वाले १२ योधा १३ घूमते हैं १४ हमारे १५ रथी १६ जय को प्राप्त करो॥ ५७॥

भाषाध्यात्मम्—१ हे अन्तर्यामिन् २ इन काम सेनाओं को ३ सब ओर से ४ हटाओ ५ जिस कारण अनाहत शब्द कर्ता ६ ज्ञान पूर्वक ७ अत्यन्त शब्द करता है ८ इन अन्तःकरण सेनाओं को ९ लौटाओ १० और हमारे ११ मानस सूर्य के पक्ष की समान १२ प्राण १३ घूमते हैं १४ हमारी १५ इन्द्रियां १६ काम जय को प्राप्त करो॥ ५७॥

आग्नेयः कृष्णग्रीवः सारस्वती मेषी बभ्रुः सौम्यः पौष्णः श्यामः शितिपृष्ठो बार्हस्पत्यः शिल्पो वैश्वदेव ऐन्द्रोऽरुणो मारुतः कल्माष ऐन्द्राग्नः संहितोऽधोरामः सावित्रो वारुणः कृष्ण एकशितिपात्पेत्वः॥ ५८॥

आग्नेयः। कृष्णऽग्रीवः। सारस्वती। मेषी। बभ्रुः। सौम्यः।

[7]श्यामः। [8]पौष्णाः। [9]शितिपृष्ठः। [10]बार्हस्पत्यः। [11]शिल्पाः। [12]वैश्वदेवः।
[13]अरुणः। [14]ऐन्द्रः। [15]कल्माषः। [16]मारुतः। [17]संहितः। [18]ऐन्द्राग्नः। [19]अधो
रामः। [20]सावित्रः। [21]एकशितिपात्। [22]कृष्णः। [23]पेत्वः। [24]वारुणः॥ ५८॥

दोकंडिका जिन में पशुदेवताओं का वर्णन है वे ब्राह्मण वाक्य हैं इसकारण उनका विनियोग नहीं॥

पदार्थः- १ कृष्ण ग्रीव पशु का २ देवता अग्नि है ३ मेषी का ४ देवता सरस्वती है ५ पिङ्गल वर्ण पशु का ६ देवता सोम है ७ कृष्ण वर्ण पशु का ८ देवता पूषा है ९ श्याम पृष्ठ पशु का १० देवता बृहस्पति है ११ विचित्र वर्ण पशु के १२ देवता विश्वेदेवा हैं १३ रक्त वर्ण पशु का १४ देवता इन्द्र है १५ कर्बुर वर्ण पशु के १६ देवता मरुत हैं १७ दृढाङ्ग पशु का १८ देवता इन्द्राग्नि हैं १९ अधोदेश में श्वेत पशु का २० देवता सविता है २१ एक श्वेत पाद वाले पशु २२ एक पांव श्वेत अन्यत्र कृष्ण वर्ण पशु २३ वेगवान पशु का २४ देवता वरुण है॥ ५८॥

अथाध्यात्मम्- १ रुद्र रूप प्राण का २ देवता ब्रह्माग्नि है ३ माया रूप अन्न वाले वाक् का ४ देवता सरस्वती है ५ सत्व प्रधान मन का ६ देवता चन्द्रमा है ७ तम प्रधान मन का ८ देवता पूषा है ९ सत्व गुण आश्रय वाले जीवात्मा का १० देवता गुरु है ११ चित्र कला आदि कर्म रूप रजः प्रधान मन के १२ देवता विश्वेदेवा हैं १३ संध्या के बादल की समान वर्ण वाले अपान का १४ देवता समष्टि अपान है १५ मन ललाट वाणी मेधा को आसन रखने वाले जीवात्मा का १६ देवता प्राण है १७ भले प्रकार हितकारी अन्तर्यामी पुरुष के १८ देवता ब्रह्म महानारायण हैं १९ मानस कमल में रमने वाले मानस सूर्य का २० देवता सूर्य है २१ अनन्य भक्ति रूप एक श्वेत पाद वाले २२ अन्यत्र कृष्ण २३ वेगवान आत्म प्रतिबिंब का २४ देवता ईश्वर है॥ ५८॥

अग्नयेऽनीकवते रोहिताञ्जिरनड्वानधोरामौ सावित्रौ पौष्णौ रजतनाभी वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ मारुतः कल्माषऽ आग्नेयः कृष्णोऽजः सारस्वती मेषी वारुणः पेत्वः ॥ ५९ ॥

रोहिताञ्जिः। अनड्वान्। अनीकवते। अग्नये। अधोरामौ सावित्रौ। रजतनाभी। पौष्णौ। पिशङ्गौ। तूपरौ। वैश्वदेवौ। कल्माषः। मारुतः। कृष्णः। अजः। आग्नेयः। मेषी। सारस्वती। पेत्वः।

पदार्थः – १ रक्तनिलकवाला २ वृषभ ३ मुख या सेना वाले ४ अग्नि के लिये आलभ्य है ५ अधो भाग में श्वेत दो पशु ६ सविता देवता वाले हैं ७ रजतवर्ण नाभि वाले दो पशु ८ पूषा देवता वाले हैं ९,१० पीत और निम्शृङ्ग दो पशु ११ विश्वे देवा देवता वाले हैं १२ कर्बुर वर्ण पशु का १३ देवता मरुत है १४,१५ श्याम वर्ण मेष का १६ देवता अग्नि है १७ मेषी का १८ देवता सरस्वती है १९ वेगवान पशु का २० देवता वरुण है ५९

अथाध्यात्मम् – १ संसार वृक्ष रूप देह वाला २ ब्रह्माण्ड रूप रथ का वाहक सूर्य ३ सुखवान ४ ब्रह्माग्नि के लिये आलभ्य है ५ ब्रह्मांड के मध्य व्यष्टि देहाभिरामजी वैश्वर का ६ देवता महानारायण है ७ मन और मानस कमल का ८ देवता पूषा है ९,१० अहिंसक सूक्ष्म लिंग शरीर के ११ देवता विश्वे देवा हैं १२ पूर्वोक्त गुण वाले जीवात्मा का १३ देवता प्राण है १४,१५ तम प्रधान वाक् का १६ देवता अग्नि है १७ पूर्वोक्त गुण वाले वाक् का १८ देवता सरस्वती है १९ प्रतिबिंब का २० देवता ईश्वर है ॥ ५९ ॥

अग्नये गायत्राय त्रिवृते राथन्तराया ष्टाकपाल इन्द्राय त्रैष्टुभाय पंचदशाय बार्हता

यैकादश कपालो विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्त दशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादश कपालो मित्राव रुणाभ्यामानुष्टुभाभ्यामेकविंशाभ्यां वैराजाभ्याम्पयस्या बृहस्पतये पाङ्क्ताय त्रिणवाय शाक्वराय चरुः सवित्र औष्णिहाय त्रयस्त्रिंशाय रैवताय द्वादश कपालः प्राजापत्यश्चरुरदित्यै विष्णुपत्न्यै चरुरग्नये वैश्वानराय द्वादश कपालोऽनुमत्या अष्टा कपालः ॥ ६० ॥

गायत्राय। त्रिवृते। रथन्तराय। अग्नये। अष्टाकपालः। त्रैष्टुभाय। पञ्चदशाय। बार्हताय। इन्द्राय। एकादश कपालः। जागतेभ्यः। सप्त दशेभ्यः। वैरूपेभ्यः। विश्वेभ्यः। देवेभ्यः। द्वादश कपालः। आनुष्टुभाभ्याम्। एकविंशाभ्याम्। वैराजाभ्याम्। मित्रा वरुणाभ्याम्। पयस्या। पाङ्क्ताय। त्रिणवाय। शाक्वराय। बृहस्पतये। चरुः। औष्णिहाय। त्रयस्त्रिंशाय। रैवताय। सवित्रे। द्वादश कपालः। प्राजापत्यः। चरुः। विष्णुपत्न्यै। अदित्यै। चरुः। वैश्वानराय। अग्नये। द्वादश कपालः। अनुमत्यै। अष्टा कपालः ॥ ६० ॥

यह भी ब्राह्मण वाक्य है इसलिये विनियोग नहीं ॥

पदार्थः – १ गायत्री से स्तुत २ त्रिवृत्स्तोम से स्तुत ३ रथन्तर साम से स्तुत ४ अग्नि के लिये ५ अष्टा कपाल में संस्कृत पुरोडाश करना चाहिये ६ त्रिष्टुप् से स्तुत ७ पंचदश स्तोम से स्तुत ८ बृहत्साम से स्तुत ९ इन्द्र के लिये १० एकादश कपाल में संस्कृत पुरोडाश करना चाहिये ११ जगती छन्द से स्तुत १२ सप्त दश स्तोम से स्तुत १३ वैरूप

साम से स्तुत १४,१५ विश्वे देवाओं के लिये १६ द्वादश कपाल में संस्कृत पुरोडाश करना चाहिये १७ अनुष्टुप् से स्तुत १८ एक विंश स्तोम से स्तुत १९ वैराज साम से स्तुत २० मित्रा वरुण देवताओं के लिये २१ दुग्ध में भिन चरु करना चाहिये २२ पंक्ति छन्द से स्तुत २४ त्रिणव स्तोम से स्तुत २४ शक्कर साम से स्तुत २५ वृहस्पति के लिये २६ चरु करना चाहिये २७ उष्णिक छन्द से स्तुत २८ त्रियस्त्रिंश स्तोम से स्तुत २९ रैवत साम से स्तुत ३० सविता वा शिव के लिये ३१ द्वादश कपाल में संस्कृत पुरोडाश करना चाहिये ३२ प्रजापति देवता का ३३ चरु करना चाहिये ३४ विष्णु पत्नी ३५ अदिति के लिये ३६ चरु करना चाहिये ३७,३८ वैश्वानर अग्नि के लिये ३९ द्वादश कपाल में संस्कृत चरु करना चाहिये ४० अनुमति देवी के लिये ४१ अष्ट कपाल में संस्कृत पुरोडाश करना चाहिये॥ ६०॥

अथाध्यात्मम्— १ गायत्री रूप २ त्रिवृत्स्तोम रूप ३ रथन्तर साम रूप ४ ब्रह्माग्नि के लिये ५ अष्टधा प्रकृति आत्म रूप पुरोडाश करना चाहिये ६ त्रिष्टुप् रूप ७ पञ्च दश स्तोम रूप ८ वृहत्साम रूप ९ महानारायण के लिये १० दशेन्द्रिय सहित मन रूप पुरोडाश करना चाहिये ११ जगती छन्द रूप १२ सप्त दश स्तोम रूप १३ वैरूप साम रूप १४,१५ विश्वे देवाओं के लिये १६ इन्द्रिय मन वुद्धि रूप पुरोडाश करना चाहिये १७ अनुष्टुप् रूप १८ एक विंश स्तोम रूप १९ वैराज साम रूप २० प्राणउदान के लिये २१ आत्म प्रति विंब रूप चरु करना चाहिये २२ पंक्ति छन्द रूप २३ त्रिणव स्तोम रूप २४ शाक्कर साम रूप २५ वेद वचनों के स्वामी विष्णु के लिये २६ मानस सूर्य रूप चरु करना चाहिये २७ उष्णिक् छन्द रूप २८ त्रयस्त्रिंश स्तोम रूप २९ रैवत साम रूप ३० शिव के लिये

३१ इन्द्रिय मन बुद्धि रूप पुरोडाश करना चाहिये ३२ ब्रह्म जिसका देवता है ऐसा ३३ मन रूप चरु करना चाहिये ३४ विष्णु पत्नी ३५ परा शक्ति रूप लक्ष्मी के लिये ३६ आत्म प्रतिबिंब रूप चरु करना चाहिये ३७,३८ वैश्वानर अग्नि के लिये ३९ कमल और कमलस्थ देवताओं का पालक जाठराग्नि रूप पुरोडाश करना चाहिये ४० अनुमति नाम मध्य स्थान देवता के लिये ४१ अष्टधा प्रकृति रूप पुरोडाश करना चाहिये ॥ ६०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते यजुर्वेदीय ब्रह्मभाष्ये शिशाश्वमेध मंत्रोक्तिकथनं नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९॥

ओंनारायणंनमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदीरयेत्॥

अथ पुरुषमेधः

देव सवितः प्रसुव यज्ञम्प्रसुव यज्ञपतिम्भगाय दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचन्नः स्वदतु ॥ १॥ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥ २॥

इन दोनों मंत्र की व्याख्या अध्याय (११,७)(३,३५) में होगई॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्न आसुव ॥ ३॥

देव। सवितः। विश्वानि। दुरितानि। परा सुव। यत्। भद्रम्। तत्। नः। आसुव ॥ ३॥

ओं विश्वानीत्यस्य (नारायण ऋषिः गायत्री छन्दः सविता देवता) १

पदार्थः— १ हे देव २ सूर्य वा नाना प्रकार के अवतारों से क्रीडनशील विष्णो वा हे महानारायण ३ सब ४ पापों को ५ दूर करो ६ जो ७ कल्याण है ८ वह ९ हम को १० प्राप्त कराओ ॥ ३॥

विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः। सवितारं नृचक्षसम्॥ ४॥

चित्रस्य। वसोः। राधसः। विभक्तारम्। नृचक्षसम्। सवितारम्। हवामहे॥ ४॥

ओं विभक्तारमित्यस्य (नारायण ऋषिः गायत्री छन्दः सविता देवता)१

पदार्थः – हम १ नानाप्रकार के २ धन ३ और योग धन के ४ विभागकर्त्ता ५ अन्तर्यामी ६ सब के प्रेरक परमेश्वर को ७ आह्वान करते हैं॥ ४॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीबमाक्रयायाऽअयोगूं कामाय पुंश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम्॥ ५॥

ब्रह्मणे। ब्राह्मणम्। क्षत्राय। राजन्यम्। मरुद्भ्यः। वैश्यम्। तपसे। शूद्रम्। तमसे। तस्करम्। नारकाय। वीरहणम्। पाप्मने। क्लीबम्। आक्रयायै। अयोगूम्। कामाय। पुंश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय। मागधम्॥ ५॥

ओं ब्रह्मण इत्यस्य (नारायण ऋषिः विराडतिशक्वरी छन्दः द्रव्यं दैवतम्)१

पदार्थः – अब पुरुषमेध के पशु और देवताओं को कहते हैं ये सब पशु यज्ञान्त में छोड़ दिये जाते हैं १ ब्रह्म के लिये २ ब्राह्मण को नियुक्त करता है ३ क्षत्र के लिये ४ क्षत्री को ५ मरुद्गणों के लिये ६ वैश्य को ७ तप के लिये ८ शूद्र को ९ तम के लिये १० स्तेन को ११ नारक देवता के लिये १२ नष्टाग्नि वा शूर पुरुष को १३ पाप के लिये १४ नपुंसक को १५ आक्र देवता के लिये १६ अयोगू पशु को १७ काम के लिये १८ व्यभिचारिणी को १९ अतिक्रुष्ट के लिये २० मागध को नियुक्त करता है॥ ५॥

अथाध्यात्मम्—१ ब्रह्म के लिये २ ब्रह्मज्ञानी आत्म प्रतिविंब को नियुक्त करता है ३ समष्टि प्राण के लिये ४ व्यष्टि प्राण को ५ मरुद्गणों के लिये ६ अन्य प्राण समूह को ७ समष्टि भूतात्मा के लिये ८ व्यष्टि भूतात्मा को ९ तमो गुण के लिये १० काम को ११ नरकाधिपति के लिये १२ क्रोध को १३ पाप पुरुष के लिये १४ वैकल्यकारण लोभ को १५ अपरा प्रकृति के लिये १६ अहङ्कार को १७ कामदेव के लिये १८ मोह को १९ अति निंदित संसार के लिये २० माया से प्राप्त भोग को नियुक्त करता है ॥ ५ ॥

नृत्ताय सूतङ्गीताय शैलूषन्धर्माय सभाचरन्नरिष्ठायै भीमलन्नर्माय रेभꣳ हसाय कारिमानन्दाय स्त्रीषखम्प्रमदे कुमारीपुत्रम्मेधायै रथकारन्धैर्याय तक्षाणम् ॥ ६ ॥

नृत्ताय । सूतम् । गीताय । शैलूषम् । धर्माय । सभाचरम् । नरिष्ठायै । भीमलम् । नर्माय । रेभम् । हसाय । कारिम् । आनन्दाय । स्त्रीषखम् । प्रमदे । कुमारीपुत्रम् । मेधायै । रथकारम् । धैर्याय । तक्षाणम् ॥ ६ ॥

ॐ नृत्तायेत्यस्य (नारायण ऋषिः निचृदष्टिश्छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः—१ नृत्त के लिये २ सूत को ३ गीत के लिये ४ नट को ५ धर्म के लिये ६ सभाचर को ७ नरिष्ठ देवता के लिये ८ भयङ्कर पुरुष को ९ नर्म के लिये १० वाचाट को ११ हंस के लिये १२ करणविशिष्ट को १३ आनन्द के लिये १४ स्त्री के सखा को १५ प्रमद के लिये १६ कानीन को १७ मेधा के लिये १८ रथकार को १९ धैर्य के लिये २० सूत्रधार को नियुक्त करता है ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्—१ नृत्त के लिये २ प्रेरण शक्ति को ३ गीत के लिये ४ तालधारण शक्ति को ५ धर्म के लिये ६ सभा निवेशन शक्ति को ७ बुद्धि में स्थित सं-

सार सत्ता के लिये ८ भय हेतु शक्ति को ९ परिहास के लिये १० वक्र भाषण शक्ति को ११ आत्मा के लिये १२ ब्रह्मज्ञान को १३ ब्रह्मानंद के लिये १४ काम को १५ अहं ब्रह्मास्मि मद के लिये १६ भ्रान्ति को १७ मेधा के लिये १८ अज्ञान को १९ धैर्य के लिये २० चिन्तारूप दुःख को नियुक्त करता है ॥ ६ ॥

तपसे कौलालम्मायायै कर्मारꣳ **रूपाय मणिकार**ꣳ **शुभे वप**ꣳ **शरव्याया इषुकार**ꣳ **हेत्यै धनुष्कारङ्कर्मणे ज्याकारन्दिष्टाय रज्जुसर्जम्मृत्यवे मृगयुमन्तकाय श्वनिनम् ७**

तपसे[1]। कौलालम्[2]। मायायै[3]। कर्मारम्[4]। रूपाय[5]। मणिकारम्[6]। शुभे[7]। वपम्[8]। शरव्यायै[9]। इषुकारम्[10]। हेत्यै[11]। धनुष्कारम्[12]। कर्मणे[13]। ज्याकारम्[14]। दिष्टाय[15]। रज्जुसर्जम्[16]। मृत्यवे[17]। मृगयुम्[18]। अन्तकाय[19]। श्वनिनम्[20] ॥ ७ ॥

ॐ तपस इत्यस्य (नारायण ऋषिः- विराडतिशक्वरी छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः - १ तप के लिये २ कुलाल पुत्र को ३ माया के लिये ४ लोहकार को ५ रूप के लिये ६ रत्न कर्त्ता को ७ शुभ के लिये ८ बीजवमा को ९ शरव्याय के- लिये १० बाण कर्त्ता को ११ हेति के लिये १२ धनुः कर्त्ता को १३ कर्म के लिये- १४ ज्या कर्त्ता को १५ दिष्ट के लिये १६ रज्जु स्रष्टा को १७ मृत्यु के लिये १८ मृग ग्राही को १९ अन्तक के लिये २० श्वान नेता को नियुक्त करता है ॥ ७

अथाध्यात्मम् - १ तप के लिये २ बंधन योग्य लिंग शरीर को ३ माया- के लिये ४ कर्म कर्त्ता स्थूल शरीर को ५ रूप के लिये ६ सूर्य रूप चक्षु को ७ योगी समूह के लिये ८ प्राणायाम को ९ लक्ष्य रूप परा शक्ति के लिये १० आत्मा को ११ वज्र रूप ब्रह्माकार प्रज्ञा शक्ति के लिये १२ ज्ञान को १३ ऐश्व- र्य कर्म के लिये १४ आत्म प्रतिबिंब को १५ भाग्य के लिये १६ बंधन हेतु निर्मा

ताकर्म को १७ मृत्यु के लिये १८ व्याध रूप आत्म प्रति विंब को १९ अन्नक के लिये २० विषयवासना के पालक आत्म प्रतिविंब को नियुक्त करता है ॥७॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्ठमृक्षीकाभ्यो नैषादस्पुरुषव्याघ्राय दुर्मदङ्गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यम्प्रयुग्भ्य उन्मत्तꣳ सर्पदेवजनेभ्यो प्रतिपदमयेभ्यः कितवमीर्यताया अकितवम्पिशाचेभ्यो विदलकारीं यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम् ॥८॥

नदीभ्यः। पौञ्जिष्ठम्। ऋक्षीकाभ्यः। नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय। दुर्मदम्। गंधर्वाप्सरोभ्यः। व्रात्यम्। प्रयुग्भ्यः। उन्मत्तम्। सर्पदेवजनेभ्यः। अप्रतिपदम्। अयेभ्यः। कितवम्। ईर्यतायै। अकितवम्। पिशाचेभ्यः। विदलकारीम्। यातुधानेभ्यः। कण्टकीकारीम् ॥८॥

ओंनदीभ्य इत्यस्य (नारायण ऋषिः कृतिश्छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः — १ नदियों के लिये २ पुल्कस की संतान को ३ ऋक्षी कों के लिये ४ निषाद पुत्र को ५ पुरुषव्याघ्र के लिये ६ उन्मत्त को ७ गन्धर्व अप्सराओं के लिये ८ सावित्री पतित को ९ प्रयुगों के लिये १० उन्मत्त को ११ सर्पदेवजनों के लिये १२ विकल को १३ अयों के लिये १४ द्यूतकार को १५ ईर्यना देवी के लिये १६ अद्यूतकृत को १७ पिशाचों के लिये १८ वंश पात्र कारिणी को १९ यातु धानों के लिये २० कण्टकी कर्म करने वाली को नियुक्त करता है ॥८॥

अथाध्यात्मम् — १ नदियों के लिये २ नाड़ियों में उत्पन्न अन्न रस को ३ रुद्रों के लिये ४ अहंकार को ५ रुद्र विशेष के लिये ६ दुष्ट मद को ७ गन्धर्व अप्सराओं के लिये ८ ग्राम योग्य नृत्यादि सुख को ९ संसार संयोगी देवताओं के लिये १० उन्मत्त मनोवृत्ति विशेष को ११ देव मनुष्य सम्बंधी लोकों के लिये

१२ अज्ञान को १३ सुवर्ण आदि के लिये १४ द्यूत कार मनोवृत्ति विशेष को १५ ध्यान मौन आदि चर्या के लिये १६ अद्यूत कार मनो वृत्ति विशेष को १७ पिशाचों के लिये १८ अद्वैत खंडिनी वुद्धि वृत्ति को १९ यातु धानों के लिये २० हिंसा कर्म कारिणी वुद्धि वृत्ति को नियुक्त करता है॥ ८॥

सुन्धये जारङ्गेहायोपपति मार्त्यै परिवित्तन्निर्ऋत्यै परिविविदानमराध्या एदिधिषुः पतिन्निष्कृत्यै पेशस्कारीꣳ संज्ञानाय स्मरकारीम्प्रकामोद्यायोपसदं वर्णायानुरुधम्बलायोपदाम॥ ९॥

सन्धये। जारम्। गृहाय। उपपतिम्। आर्त्यै। परिवित्तम्। निर्ऋत्यै। परिविविदानम्। आराध्यै। एदिधिषुःपतिम्। निष्कृत्यै। पेशस्कारीम्। सञ्ज्ञानाय। स्मरकारीम्। प्रकामोद्याय उपसदम्। वर्णाय। अनुरुधम्। वलाय। उपदाम्॥ ९॥

ॐ सन्धय इत्यस्य (नारायण ऋषिः भुरिगत्यष्टिश्छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः—१ सन्धि के लिये २ उपपति को ३ गेह के लिये ४ उपपति को ५ आर्त्ति के लिये ६ छोटे भाई का विवाह होजाने पर अनविवाहे को ७ निर्ऋति के लिये ८ ज्येष्ठ भाई का विवाह न होने पर विवाहे को ९ आराध्या के लिये १० वड़ी वहन का विवाह न होने पर विवाही के पति को ११ निष्कृति के लिये १२ रूप कर्त्री को १३ संज्ञान के लिये १४ काम दीप्ति करी को १५ प्रकामोद्या के लिये १६ समीप स्थित को १७ वर्ण देवता के लिये १८ अनुसर को १९ वल के लिये २० उपायन दाता को नियुक्त करता है॥ ९॥

अथाध्यात्मम्- १ अपरा के लिये २ जन्म दाता कर्म को ३ ब्रह्मांड के लिये ४ व्यभिचारी आत्म प्रतिविंव को ५ अपरा के लिये ६ देह परित्याग को ७ परा शक्ति के लिये ८ आत्म शक्तियों के दान को ९ आराधन योग्य पराश

क्ति के लिये १० सांसारिक वुद्धि के पति आत्म प्रतिविंव को ११ निर्मुक्ति के लिये १२ रूप कर्त्ता जीव शक्ति को १३ ब्रह्मज्ञान के लिये १४ काम दीप्ति करी बुद्धि को १५ काम प्रतिपादक शास्त्र के लिये १६ तत्समीपस्थ मनो वृत्ति विशेष को १७ रक्त स्याम-स्वेत वर्ण परमेश्वर के लिये १८ आराध्य की इष्ट साधनेच्छा रूप मनो वृत्ति विशेष को १९ विराट् रूप के लिये २० उपायन दाता इन्द्रिय समूह को नियुक्त करता है॥ ९॥

उत्सादेभ्यः कुब्जम्प्रमुदे वामनन्द्वार्भ्यः स्रामꣳ स्वप्नायान्धमधर्माय वधिरम्पवित्राय भिषजम्प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शमाशिक्षायै प्रश्निनमुपशिक्षायाऽअभिप्रश्निनम्मर्यादायै प्रश्नविवाकम् ॥ १०॥

उत्सादेभ्यः। कुब्जम्। प्रमुदे। वामनम्। द्वार्भ्यः। स्रामम्। स्वप्नाय। अन्धम्। अधर्माय। वधिरम्। पवित्राय। भिषजम्। प्रज्ञानाय। नक्षत्रदर्शम्। आशिक्षायै। प्रश्निनम्। उपशिक्षायै। अभिप्रश्निनम्। मर्यादायै। प्रश्नविवाकम् ॥ १०॥

ओं उत्सादेभ्य इत्यस्य (विनियोगः पूर्ववत्-

पदार्थः- १ उत्साद देवताओं के लिये २ कुबड़े को ३ प्रमुद के लिये ४ ह्रस्वांग को ५ द्वार देवताओं के लिये ६ सर्वदा जल क्लिन्न नेत्र को ७ स्वप्न के लिये ८ नेत्र हीन को ९ अधर्म के लिये १० कर्णेन्द्रिय हीन को ११ पवित्र के लिये १२ वैद्य को १३ प्रज्ञान के लिये १४ गणक को १५ आशिक्षा के लिये १६ शकुनादि पूछने वाले को १७ उपशिक्षा के लिये १८ अभिप्रश्न वक्ता को १९ मर्याद के लिये २० प्रश्न-वक्ता को नियुक्त करता है॥ १०॥

अथाध्यात्मम्- १ परित्यागों के लिये २ देह मन प्राण के लिये जनित विषय को ३ आनन्द स्वरूप ब्रह्म के लिये ४ विष्णु विकारभूत आत्म प्रतिविंव को ५ कमलों के लिये ६ योग से गतिमान आत्म प्रतिविंव को ७ स्वप्न के लिये ८ विवेक

चक्षुहीन वृद्धि वृत्ति विशेष को ९ अधर्म के लिये १० धर्मशास्त्र श्रवण रहित श्रोत्र वृत्ति विशेष को ११ आत्मा के लिये १२ संसार रोग नाशक ज्ञान को १३ ज्ञान स्वरूप ब्रह्म के लिये १४ संसार बंधन दाता अज्ञान के दर्शक ज्ञान को १५ आशिक्षा के लिये १६ अध्यात्म सम्बन्धी प्रश्न कर्त्ता मनो वृत्ति विशेष को १७ उपशिक्षा के लिये १८ आधि दैव सम्बन्धि प्रश्न कर्त्ता मनो वृत्ति विशेष को १९ मर्यादा के लिये २० आधिभूत सम्बन्धि प्रश्न कर्त्ता मनो वृत्ति विशेष को नियुक्त करता है।१०

अर्मेभ्यो हस्तिपञ्जवाया॑श्वपम्पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालन्तेजसेज पालमिरायै कीनाशङ्कीलालाय सुराकारम्भद्राय गृहप१४ श्रेयसे वित्तधमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम् ॥ ११॥

अर्मेभ्यः। हस्तिपम्। जवाय। अश्वपम्। पुष्ट्यै। गोपालम्। वीर्याय। अविपालम्। तेजसे। अजपालम्। इरायै। कीनाशम्। कीलालाय। सुराकारम्। भद्राय। गृहपम्। श्रेयसे। वित्तधम्। आध्यक्ष्याय। अनुक्षत्तारम् ॥ ११॥

ॐ अर्मेभ्य इत्यस्य (नारायणऋषिः विराडष्टिश्छन्दः द्रव्यं देवतम्)१

पदार्थः– १ अर्म नाम देवताओं के लिये २ गज पाल को ३ जव के लिये ४ अश्व पाल को ५ पुष्टि देवी के लिये ६ धेनु पाल को ७ वीर्य के लिये ८ अवि पालको ९ तेज के लिये १० अज पाल को ११ इरा के लिये १२ कर्षुक को १३ कीलाल के लिये १४ सुराकार को १५ भद्र के लिये १६ गृह पाल को १७ श्रेय के लिये १८ धन कर्त्ता को १९ आध्यक्ष्य के लिये २० सारथ्यनुसारी को नियुक्त करता है ११

अथाध्यात्मम्– १ ब्रह्मा विष्णु महेश के लिये २ हस्ति तुल्य देह के पालक आत्म प्रतिबिंब को ३ वायु वेग के लिये ४ इन्द्रियों के पालक प्राण को ५ योग पुष्टि के लिये ६ इन्द्रिय पालक मन को ७ योग वल के लिये ८ जाठराग्नि के

रक्षकमाणको ९ समष्टि अग्नि के लिये १० वचनों की रक्षक वागेन्द्रिय को ११ पृथिवी के लिये १२ कर्षुक मनो वृत्ति विशेष को १३ अमृत के लिये १४ देहासक्त भूतात्मा को १५ कल्याण रूप परमेश्वर के लिये १६ शरीर रूप ग्रह के पालक आत्मप्रति विंव को १७ ज्ञेय के लिये १८ धन दाता पुण्य कर्म समूह को १९ अनुभव के लिये २० मन को नियुक्त करता है॥ १२॥

भायै दार्वाहारम्प्रभाया अग्न्येधम्ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारन्देवलोकाय पेशितारम्मनुष्यलोकाय प्रकरितार सर्वेभ्यो लोकेभ्यउपसेक्तारमवर्त्त्यै वधायोपमन्थितारम्मेधाय वासः पल्पूलीम्प्रकामाय रजयित्रीम॥ १२॥

[1] भायै। [2] दार्वाहारम्। [3] प्रभायै। [4] अग्न्येधम्। [5] ब्रध्नस्य। [6] विष्टपाय। [7] अभिषेक्तारम्। [8] वर्षिष्ठाय। [9] नाकाय। [10] परिवेषणं कर्त्तारम्। [11] देवलोकाय। [12] पेशितारम्। [13] मनुष्यलोकाय। [14] प्रकरितारम्। [15] सर्वेभ्यः लोकेभ्यः। [16] उपसेक्तारम्। [17] अवर्त्त्यै। [18] वधाय। [19] उपमन्थितारम्। [20] मेधायै। [21] वासः। [22] पल्पूलीम्। [23] प्रकामाय। [24] रजयित्रीम्॥ [25] १२॥

ओंभायाइत्यस्य (नारायणऋषिः विराट् संकृतिश्छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः—१ भा के लिये २ काष्ठ आहर्त्ता को ३ प्रभा के लिये ४ अग्निवर्धक को ५,६ सूर्यलोक के लिये ७ अभिषेक्ता को ८,९ उत्कृष्ट स्वर्ग के लिये १० परिवेषण कर्त्ता को ११ देवलोक के लिये १२ प्रतिमा आदि अवयव कर्त्ता को १३ मनुष्यलोक के लिये १४ विक्षेप्ता को १५,१६ सव लोकों के लिये १७ उपसेचन कर्त्ता को १८,१९ अवऋति वध के लिये २० उपमंथन कर्त्ता को २१ मेधा के लिये २२,२३ वस्त्र प्रक्षालन कर्त्री को २४ प्रकाम के लिये २५ वस्त्र रंग कारिणी स्त्री को नियुक्त करता है॥ १२॥

अथाध्यात्मम् – १ ब्रह्मज्योति के लिये २ प्राणों के आहर्त्ता जीवात्मा को ३ महानारायणज्योति के लिये ४ प्राण को ५,६ सूर्यलोक के लिये ७ नेत्र को ८,९ इन्द्रलोक के लिये १० हस्तेन्द्रिय को ११ देवलोक के लिये १२ देह के अवयव कर्त्ता इन्द्रिय समूह को १३ मनुष्यलोक के लिये १४ विक्षेमा देह को १५ १६ सवलोकों के लिये १७ उपसेचन कर्त्ता विषय को १८ मृत्युभार्यी १९ और लोक संहार के लिये २० तमोगुण को २१ योग यज्ञ के लिये २२,२३ देह रूप गृह की छेदन कर्त्ती सत्वप्रधान वुद्धि को २४ काम देव के लिये २५ इन्द्रियों का रंग करने वाली रजः प्रधान वुद्धि को ॥१२॥

ऋतयै स्तेन॑हृदयं वैरहत्याय॒ पिशु॑नं॒ विवि॑क्त्यै क्षत्तार॒मौप॑द्रष्ट्याया॒नुक्षत्ता॒रम्बला॑या॒नुच॒रम्भू॒म्ने परि॑ष्क॒न्दम्प्रि॒याय॑ प्रियवा॒दिन॒मरि॑ष्ट्या अश्वसा॒दꣳ स्व॒र्गाय॑ लो॒काय॑ भाग॒दु॒घं वर्षि॑ष्ठाय॒ नाका॑य परिवे॒ष्टार॑म् ॥१३॥

ऋतये। स्तेनहृदयम्। वैरहत्याये। पिशुनम्। विविक्त्यै। क्षत्तारम्। औपद्रष्ट्याय। अनुक्षत्तारम्। वलाय। अनुचरम्। भूम्ने। परिस्कन्दम्। प्रियाय। प्रियवादिनम्। अरिष्ट्यै। अश्वसादम्। स्वर्गाय। लोकाय। भागदुघम्। वर्षिष्ठाय। नाकाय। परिवेष्टारम् ॥१३॥

ओं ऋतय इत्यस्य (नारायण ऋषिः कृतिश्छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः – १ ऋति के लिये २ स्तेन हृदय को ३ वैरहत्या के लिये ४ परवृत्तसूचक को ५ विविक्ति के लिये ६ प्रतीहार को ७ औपद्रष्ट्य के लिये ८ प्रतिहारसेवक को ९ वल के लिये १० सेवक को ११ भूमा के लिये १२ परिष्कन्द को १३ प्रिय के लिये १४ मधुरभाषी को १५ अरिष्टि के लिये १६ अश्वारोह को १७,१८

स्वर्गलोक के लिये १९ विभाग दाता को २०,२१ उत्कृष्ट स्वर्ग के लिये २२ परिवेष्टा को ॥ १३ ॥

अथाध्यात्मम् – १ निन्दा के लिये २ काम को ३ वैर रूप हत्या के लिये ४ परवृत्त सूचक मनो वृत्त विशेष को ५ विवेक रूप देवी के लिये ६ मज्ञा को ७ साक्षी रूप अग्नि के पुत्र वागेन्द्रिय के लिये ८ व्यष्टि वागेन्द्रिय को ९ योग वल के लिये १० मन को ११ आनंद स्वरूप ब्रह्म के लिये १२ गतिमान जीवात्मा को १३ इष्टदेव के लिये १४ भक्त को १५ अविनाशिनी पराशक्ति के लिये १६ प्राणारोह आत्म प्रतिविंव को १७,१८ स्वर्गलोक के लिये १९ पुण्य कर्म को २०,२१ इन्द्रलोक के लिये २२ यज्ञ को नियुक्त करता है ॥ १३ ॥

मन्यवे॑ऽयस्ता॒पं क्रोधा॑य निस॒रं योगा॑य यो॒क्तारं॑ शोका॑याभिस॒र्तारं॒ क्षेमा॑य विमो॒क्तार॑मुत्कूल निकूलेभ्य॑स्त्रि॒ष्ठिनं॒ वपु॑षे मानस्कृ॒तं शीला॑याञ्जनी का॒रीं निरृ॑त्यै कोशका॒रीं य॒माया॒सूम् ॥ १४ ॥

मन्यवे। अयस्तापम्। क्रोधाय। निसरम्। योगाय। योक्तारम्। शोकाय। अभिसर्तारम्। क्षेमाय। विमोक्तारम्। उत्कूलनिकूलेभ्यः। त्रिष्ठिनम्। वपुषे। मानस्कृतम्। शीलाय। आञ्जनीकारीम्। निर्ऋत्यै। कोशकारीम्। यमाय। असूम् ॥ १४ ॥

ओं मन्यव इत्यस्य (नारायण ऋषिः भुरिगत्यष्टिश्छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः – १ मन्यु के लिये २ लोह तापक को ३ क्रोध के लिये ४ निरंतर सर्त्ता को ५ योग के लिये ६ योग कर्त्ता को ७ शोक के लिये ८ अभिसर्त्ता को ९ क्षेम के लिये ९ विमोचन कर्त्ता को ११ उत्कूल निकूलों के लिये १२ विद्या आदि में स्थित शीलवान को १३ वपु के लिये १४ अभिमानी को १५ शील के लिये १६ अञ्जन विद्या कर्त्री को १७ निर्ऋति के लिये १८ कोशकारी स्त्री को १९ यम के लिये २० वन्ध्या को नियुक्त करता है ॥ १४ ॥

अथाध्यात्मम् – १ अहंकार के लिये २ अग्नि के तापक क्रोध को ३ क्रोध के लिये ४ चलचित्त को ५ योग के लिये ६ योग कर्त्ता मन को ७ शोक के लिये ८ अज्ञान को ९ क्षेम के लिये १० विमोचन कर्त्ता ज्ञान को ११ ऊर्ध्वाधः कमलों के लिये १२ त्रिदेहस्थ जीवात्मा को १३ देह के लिये १४ अभिमान कर्त्ती मनो वृत्ति विशेष को १५ शील के लिये १६ ज्ञानाञ्जन विद्या कर्त्री बुद्धि वृत्ति को १७ अधर्म भार्या के लिये १८ हिंसा रूप खड्ग वरण कोश की बनाने वाली बुद्धि वृत्ति को १९ यम के लिये २० वर्णाश्रम कर्म फल रहित मनो वृत्ति को ॥ १४॥

यमाय यमसूमथर्वभ्योवतोका थं सम्वत्सराय पर्यायिणी म्परिवत्सराया विजाता मिदावत्सराया तीत्वरी मिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय विर्जर्जरा थं सम्वत्सराय पलिक्नी मृभुभ्योजिनसन्ध थं साध्येभ्यश्चर्मम्नम् १५

यमाय। यमसूम्। अथर्वभ्यः। अवतोकाम्। सम्वत्सराय। पर्यायिणीम्। परिवत्सराय। अविजाताम्। इदावत्सराय। अतीत्वरीम्। इद्वत्सराय। अतिष्कद्वरीम्। वत्सराय। विजर्जराम्। सम्वत्सराय। पलिक्नीम्। ऋभुभ्यः। अजिनसन्धम्। साध्येभ्यः। चर्मम्नम्॥ १५॥

ओं यमायेत्यस्य (नारायण ऋषिः स्वराडति धृतिश्छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः—१ यम के लिये २ युग्म प्रसविनी स्त्री को ३ अथर्वा के लिये ४ निरपत्य स्त्री को ५ सम्वत्सर के लिये ६ अनुक्रमज स्त्री को ७ परिवत्सर के लिये ८ अप्रसूता स्त्री को ९ इदावत्सर के लिये १० अत्यन्त कुलटा को ११ इद्वत्सर के लिये १२ अतिष्कद्वरी स्त्री को १३ वत्सर के लिये १४ शिथि

लशरीर को १५ सम्वत्सर के लिये १६ श्वेत केशा को १७ ऋभु देवताओं के लिये १८ चर्म संधाता को १९ साध्य देवताओं के लिये २० चर्माभ्यास कर्त्ता को ॥ १५॥

अथाध्यात्मम् – १ यम के लिये २ द्वैतोत्पादक बुद्धि वृत्ति को ३ प्राणों के लिये ४ निर्बीज जीवशक्ति को ५ ईश्वर के लिये ६ यज्ञानुक्रम ज्ञाता बुद्धि वृत्ति को ७ विष्णु के लिये ८ निर्वासना बुद्धि वृत्ति को ९ ब्रह्मा के लिये १० अति गति शीला बुद्धि वृत्ति को ११ शिव के लिये १२ देहाभिमान से स्कन्दन शीला बुद्धि वृत्ति को १३ आत्मा के लिये १४ शिथिला बुद्धि वृत्ति को १५ अन्तर्यामी के लिये १६ वृद्धा बुद्धि वृत्ति को १७ देवताओं के लिये १८ मृगचर्मधारक योग परायण मनो वृत्ति विशेष को १९ साध्य देवताओं के लिये २० ब्रह्मा विष्णु महेश परा का ध्यानाभ्यास कर्त्री मनो वृत्ति को नियुक्त करै॥ १६॥

सरोभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो वैन्दन्नड्वलाभ्यः शौष्कलम्पाराय मार्गारमवाराय कैवर्त्तन्तीर्थेभ्य आन्दं विषमेभ्यो मैनालꣳ स्वनेभ्यः पर्णकङ्गुहाभ्यः किरातꣳ सानुभ्यो जम्भकम्पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम् ॥ १६॥

सरोभ्यः। धैवरम्। उपस्थावरोभ्यः। दाशम्। वैशन्ताभ्यः। वैन्दम्। नड्वलाभ्यः। शौष्कलम्। पाराय। मार्गारम्। अवाराय। कैवर्तम्। तीर्थेभ्यः। आन्दम्। विषमेभ्यः। मैनालम्। स्वनेभ्यः। पर्णकम्। गुहाभ्यः। किरातम्। सानुभ्यः। जम्भकम्। पर्वतेभ्यः। किम्पुरुषम्॥ १६॥

ओं सरोभ्य इत्यस्य (नारायण ऋषिः भुरिगत्तिधृतिश्छन्दः द्रव्यं दैवतम्)

पदार्थः – १ सरोवरों के लिये २ कैवर्त्तापत्य को ३ उपस्थावर जलों के लिये ४ धीवर को ५ वैशन्त नाम जलों के लिये ६ निषादापत्य को ७ नड्व-

लाओं के लिये ८ मत्स्यजीवी को ९ पार के लिये १० मृगारि की सन्तान को ११ अ-
वार के लिये १२ कैवर्त को १३ तीर्थों के लिये १४ वन्धन कर्त्ता को १५ विषमों
के लिये १६ मान ग्राही की सन्तान को १७ स्वनों के लिये १८ भिल्लु को १९ गु
हाओं के लिये २० किरात को २१ सानुओं के लिये २२ हिंसक को २३ पर्वतों के
लिये २४ कुत्सित नर को॥ १६॥

अथाध्यात्मम्-१ वहि र्मुख इन्द्रियों के लिये २ वुद्धि के पति गुरुरूप देश
को ३ इष्टदेव के समीप स्थिर इन्द्रियों के लिये ४ परमेश्वर दर्शनादि दाता भ-
क्ति भाव को ५ इष्टदेव में प्रवेश कारक इन्द्रिय शक्तियों के लिये ६ मोक्ष कारण
योगैश्वर्य को ७ विषय रूप तृण युक्तों के लिये ८ शान्ति सरस्वति मन्त्रा ब्रह्मा
नंद के गृहीता मन को ९ मनः समुद्र के उत्तर तीर के लिये १० योग मार्ग के दा
ता ज्ञान को ११ अर्वाक् तीर के लिये १२ उपासना सम्पन्न ज्ञान को १३ तीर्थ भावा
पन्न इन्द्रियों के लिये १४ योग क्रिया और ज्ञान चक्षु के दाता भक्ति योग को १५
इन्द्रियों के लिये १६ मेधा सरस्वती ज्ञान चक्षु योग क्रिया के गृहीता ज्ञान यो
ग को १६ अनाहत शब्दों के लिये १८ जीवात्मा रूप सुपर्ण को १९ कमलों के
लिये २० योग से शिव रूप जीवात्मा को २१ इन्द्रिय गोल कों के लिये २२ हिं-
सक विषय को २३ स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरों के लिये २४ कुत्सित रूप सेव्या
पक काम को नियुक्त करें॥ १६॥

वीभत्सायै पौल्कसं वर्णाय हिरण्यकारन्तुलायै वाणिजम्पश्चादोषाय ग्लाविनं विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलम्भूत्यै जागरणमभूत्यै स्वपनमार्त्यै जनवादिनं व्यृद्ध्या अपगल्भꣳ सꣳशराय प्रच्छिदम्॥ १७॥

१ २ ३ ४ ५
वीभत्सायै॥ पौल्कसम्। वर्णाय। हिरण्यकारम्। तुला

ये । [६]वानिजम् । [७]पश्चाद्दोषाय । [८]ग्लाविनम् । [९]विश्वेभ्यः । [१०]भूतेभ्यः
[११]सिध्मलम् । [१२]भूत्यै । [१३]जागरणम् । [१४]अभूत्यै । [१५]स्वपनम् । [१६]आर्त्यै ।
[१७]जनवादिनम् । [१८]व्यृद्ध्यै । [१९]अपगल्भम् । [२०]संशराय । [२१]प्रच्छिदम् । १७

ओं बीभत्सा इत्यस्य (नारायणऋषिः विराड्धृतिश्छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः– १ बीभत्सा के लिये २ पुल्कसापत्य को ३ वर्ण के लिये ४ स्वर्ण निष्पादक को ५ तुला के लिये ६ वानिज को ७ पश्चा दोष के लिये ८ अहष्टको ९,१० सब भूतों के लिये ११ सिध्मा रोग वाले को १२ भूति के लिये १३ जागरण को १४ अभूति के लिये १५ शयालु को १६ आर्ति के लिये १७ जन वादी को १८ व्यृद्धि के लिये १९ अपगल्भ को २० संशर के लिये २१ प्रच्छेदन कर्त्ता को । १७

अथाध्यात्मम्– १ निन्दा के लिये २ पाननाद मांस और काम की प्रकाशक मनो वृत्ति विशेष को ३ चतुर्विध वर्ण के लिये ४ आभूषण निष्पादक मनो वृत्ति विशेष को ५ तुला के लिये ६ वनिक् वृत्ति को ७ आयु के अन्तो षार्थ हर्ष शून्य मनो वृत्ति विशेष को ९,१० सब भूतों के लिये ११ जीव मन धारण मेधा ग्राही वासना वीज को १२ सम्पत्ति वा योगैश्वर्य के लिये १३ जागरण गुण को १४ असम्पत्ति के लिये १५ स्वप्न को १६ आर्त्ति के लिये १७ जनवादिनी वाग्वृत्ति विशेष को १८ विरुद्ध सम्पत्ति के लिये १९ उत्साह हीन मनो वृत्ति विशेष को २० सम्यक् वाण रूप जीवात्मा के लिये २१ संसार वृक्ष की छेदन कर्त्ता मनो वृत्ति विशेष को ॥ १७॥

अक्षराजाय कितवं कृताया दिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापराया धिकल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुम्मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातङ्क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाण उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यम्पाप्मने सैलगम् ॥ १८ ॥

अक्षराजाय। कितवम्। कृताये। आदिनवदर्शम्। त्रेतायै। कल्पिनम्। द्वापराय। अधिकल्पिनम्। आस्कन्दाय। सभास्थाणुम्। मृत्यवे। गोव्यच्छम्। अन्तकाय। गोघातम्। यः। गाम्। विकृन्तन्तम्। भिक्षमाणः। उपतिष्ठति। क्षुधे। दुःकृताय। चरकाचार्यम्। पाप्मने। सैलगम्॥ १८॥

ओं अक्षराजायेत्यस्य (नारायण ऋषिः निचृदाकृतिश्छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः – १ अक्षराज के लिये २ धूर्त को ३ कृत युग के लिये ४ आदिनव दोष के द्रष्टा को ५ त्रेता युग के लिये ६ कल्पक को ७ द्वापर के लिये ८ अधिकल्पना कर्त्ता को ९ आस्कन्द देवता के लिये १० सभा में स्थिर को ११ मृत्यु के लिये १२ गौ प्रति गमनशील को १३ अन्तक के लिये १४ गो हन्ता को १५ जो १६,१७ गोहिंसक से १८ भिक्षा मांगता १९ समीप खड़ा होता है उसको २० क्षुधा देवी के लिये नियुक्त करै २१ दुःकृत के लिये २२ चरकों के गुरु को २३ पाप के लिये २४ दुष्ट की सन्तान को नियुक्त करै॥ १८॥

अथाध्यात्मम्- १ कलि के लिये २ द्यूत कारक मनो वृत्ति विशेष को ३ कृत युगाभिमानी देवता के लिये ४ भक्षक कर्म फल की अवज्ञा पूर्वक द्रष्टा मनो वृत्ति विशेष को ५ त्रेता के लिये ६ ब्रह्म में मायोपाधि का आरोपण करने वाली मनो वृत्ति विशेष को ७ द्वापर के लिये ८ अधिक आरोप कर्त्ता मनो वृत्ति विशेष को ९ तिरस्कार के लिये १० सभा में जड़ीभूत बुद्धि वृत्ति विशेष को ११ मृत्यु के लिये १२ वेद वचन से विमुख मनो वृत्ति विशेष को १३ अन्तक के लिये १४ विरुद्ध अर्थ करने से वेद वचनों के हन्ता मनो वृत्ति विशेष को १५ जो १६ वेद वचन को १७ विरुद्ध अर्थ करने से काटने वाले धूर्त्त से १८ विद्या भिक्षा को न चाहती १९ समीप ठैरती है उस बुद्धि वृत्ति को २० क्षुधा देवी के लिये नियुक्त करै २१ पाप कर्म के लिये २२ चौर काम कामाग्नि अहंकार देह के अ

चार्य मनो वृत्ति विशेष को २३ पाप के लिये २४ खेती को नियुक्त करै॥ १८॥

प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकं शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोरण्याय दावपम्॥ १९॥

प्रतिश्रुत्कायै। अर्तनम्। घोषाय। भषम्। अन्ताय। बहुवादिनम्। अनन्ताय। मूकम्। शब्दाय। आडम्बराघातम्। महसे। वीणावादम्। क्रोशाय। तूणवध्मम्। अवरस्पराय। शङ्खध्मम्। वनाय। वनपम्। अन्यतोरण्याय। दावपम्॥ १९॥

ॐ प्रतिश्रुत्कायाः इत्यस्य (नारायण ऋषिः भुरिग्धृतिश्छन्दः द्रव्यं देवतम्)

पदार्थः–१ प्रतिश्रुतिकाया देवी के लिये २ दुखी को ३ घोष के लिये ४ जल्पक को ५ अन्त के लिये ६ वहुवादी को ७ अनन्त के लिये ८ मूक को ९ शब्द के लिये १० आडम्बराघात को ११ महस के लिये १२ वीणावाद को १३ क्रोश के लिये १४ तूणव वजाने वाले को १५ अवरस्पर के लिये १६ शंख वजाने वाले को १७ वन के लिये १८ वन पालक को १९ अन्यतोरण्य के लिये २० वनवन्हिपालक को॥ १९॥

अथाध्यात्मम्–१ प्रतिध्वनि जिस का शरीर है उस देवी के लिये २ निन्दा को ३ घोष के लिये ४ कुक्कुर समान वृथा जल्पन को ५ संसार के लिये ६ वहुवादी वाक् वृत्ति विशेष को ७ ब्रह्म के लिये ८ मौन वृत्ति को ९ शब्दब्रह्म के लिये १० आडम्बर वाद्य के वादन को ११ यन्त्र के लिये १२ वीणावाद को १३ आव्हान के लिये १४ तूणव वजाने वाले वृत्ति प्रभेद को १५ जीव से श्रेष्ठ विष्णु के लिये १६ शंख वजाने वाले वृत्ति प्रभेद को १७ वन के लिये १८ वन पालक वृत्ति प्रभेद को १९ वन भाग के लिये २० वन वन्हि पालक वृत्ति प्रभेद को १९॥

नर्माय पुंश्चलूꣳहसाय कारिं यादसे शावल्यां ग्रामण्यं गणकमभिक्रोशकन्तान्महसे वीणावादम्पाणिघ्नन्तूणवध्मन्तान्नृत्तायानन्दाय तल्वम् २०

नर्माय। पुंश्चलूम्। हसाय। कारिम्। यादसे। शावल्याम्। ग्रामण्यम्। गणकम्। अभिक्रोशकम्। तान्। महसे। वीणावादम्। पाणिघ्नम्। तूणवध्मम्। तान्। नृत्ताय। आनन्दाय। तलवम् ॥ २० ॥

ॐ नर्मायेत्यस्य (नारायण ऋषिः भुरिगतिजगती छन्दः द्रव्यं दैवतम्) १

पदार्थः – १ नर्म देवताके लिये २ दुष्टा नारी को ३ हस के लिये ४ करणशील को ५ यादस के लिये ६ कर्बुर बर्ण की पुत्री को ७ ग्राम नेता ८ ज्योतिर्विद ९ निन्दक १० उन तीनों को ११ महस देवता के लिये १२ वीणा वाद १३ हस्त ताल वादक १४ तूणव वजाने वाला १५ उन तीनों को १६ नृत्त देवता के लिये १७ आनन्द के लिये १८ वाद्य वादक को नियुक्त करे ॥ २० ॥

अथाध्यात्मम् – १ परिहास के लिये २ व्यभिचारिणी वुद्धि हन्नि को ३ हास के लिये ४ प्रश्नोत्तर सम्वाधि किया को ५ ब्रह्मांभु रूप समुद्र में प्रादुर्भूत विराट् पुरुष के लिये ६ सत्व गुण की पुत्री सात्विकी वुद्धि को ७ नर समूह का नेता ८ ज्योतिर्विद ९ अभक्तों का निंदक १० उन तीन इच्छाओं को ११ इष्ट देव के उत्सव के लिये १२ वीणा वाद १३ हस्त ताल वजाना १४ तूणव वजाना १५ उन इच्छाओं को १६ नृत्य के लिये १७ भक्ति के आनन्दार्थ १८ वाद्य वादक मनो वृत्ति विशेष को नियुक्त करे २०

अग्नये पीवानम्पृथिव्यै पीठसर्पिणं वायवे चाण्डालमन्तरिक्षाय वꣳशनर्त्तिनन्दिवे खलतिꣳ सूर्याय हर्य्यक्षन्नक्षत्रेभ्यः किर्मिरञ्चन्द्रमसे किलासमह्ने शुक्लम्पिङ्गाक्षꣳ रात्र्यै कृष्णम्पिङ्गाक्षम् २१

अग्नये। पीवानम्। पृथिव्यै। पीठसर्पिणम्। वायवे। चाण्डालम्

अन्तरिक्षाय। वंशनर्त्तिनम्। दिवे। खलतिम्। सूर्याय। हर्यक्षम्। नक्षत्रेभ्यः। किर्मिरम्। चन्द्रमसे। किलासम्। अह्ने। शुक्लम्। पिङ्गाक्षम्। रात्र्यै। कृष्णम्। पिङ्गाक्षम्॥ २१॥

ओं अग्नय इत्यस्य (नारायण ऋषिः भुरिगत्यष्टिश्छन्दः द्रव्यं दैवतम्) १

पदार्थः–१ अग्नि के लिये २ स्थूल को ३ पृथिवी के लिये ४ पीठसर्पी को ५ वायु के लिये ६ चंडाल कर्मा को ७ अन्तरिक्ष के लिये ८ वंश पर नाचने वाले को ९ स्वर्ग के लिये १० अलोमाशिर वाले को ११ सूर्य के लिये १२ हरित नेत्र वाले को १३ नक्षत्रों के लिये १४ कर्बुर वर्ण को १५ चन्द्रमा के लिये १६ सिध्म रोग वाले को १७ दिवस के लिये १८,१९ शुक्ल वर्ण पिंगाक्ष को २० रात्रि के लिये २१,२२ कृष्ण वर्ण पिङ्गाक्ष को नियुक्त करै। २१

अथाध्यात्मम–१ जाठराग्नि के लिये २ जल माण समूह को ३ पृथिवी के लिये ४ आसन स्थितिशील देह को ५ वायु के लिये ६ प्राण गति को ७ अन्तरिक्ष के लिये ८ वंश तुल्य नाड़ियों में नर्तनशील हृदय को ९ स्वर्ग के लिये १० अलोमा शिर को ११ सूर्य के लिये १२ सूर्य में उसके अंश होने से व्याप्त जीवात्मा को १३ नक्षत्रों के लिये १४ चित्र वर्ण युक्त कमल समूह को १५ चन्द्रमा के लिये १६ देह कामिनी पृथिवी जिसका आसन है उस मन को १७ देवयान मार्ग के लिये १८,१९ सात्विक और दीपशिखा वर्ण कारण शरीर से व्याप्त जीवात्मा को २० पितृयान मार्ग के लिये २१,२२ तामसी जीवात्मा को नियुक्त करै॥ २१॥

अथैतानष्टौ विरूपानालभतेऽतिदीर्घञ्चातिह्रस्वञ्चातिस्थूलञ्चातिशुक्लञ्चातिकृष्णञ्चातिकुल्वञ्चातिलोमशञ्च। अशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः। मागधः पुंश्चली कितवः क्लीवोऽशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः॥ २२॥

अथ। एतान्। अष्टौ। विरूपान्। आ। लभते। अतिदीर्घम्। च। अतिह्रस्वम्। च। अतिस्थूलम्। च। अतिशुक्लम्। च। अतिकृष्णम्। च। अतिकुल्वम्। च। अतिलोमशम्। च। तौ। अशूद्रौ। अब्राह्मणौ। प्राजापत्याः। मागधः। पुंश्चली। कितवः। क्लीवः। एते। अशूद्राः। अब्राह्मणाः। तौ। प्राजापत्याः॥ २२॥

ओं अथैतानित्यस्य (नारायण ऋषिः निचृत्कृतिश्छन्दः द्रव्यं दैवतम्) १

अति कृशम्

पदार्थः–१ तिस के पीछे २ इन ३ आठ ४ परस्पर विरुद्ध रूप पशुओं को ५ नियुक्त करता है उनको कहते हैं ६ अति दीर्घ ७ और ८ अति ह्रस्व ९ और १० अति स्थूल ११ और १२ अति कृश १३ और १४ अति शुक्ल १५ और १६ अति कृष्ण १७ और १८ रोम रहित १९ और २० सर्वाङ्ग व्यापी रोम वाला २१ और २२ वे २३, २४ शूद्र ब्राह्मण से व्यतिरिक्त पशु होते हैं वे आठों २५ प्रजापति देवता वाले हैं तथा २६ मागध २७ पुंश्चली २८ कितव २९ क्लीव ३० ये चारों ३१, ३२ शूद्र ब्राह्मण से व्यतिरिक्त हैं ३३ वे ३४ प्रजापति देवता वाले हैं उन नियुक्त पुरुषों को सहस्र शीर्षा नाम १६ ऋचा से दक्षिण ओर बैठा हुआ होता की समान स्तुति करता है फिर आलम्भन क्रम से यथा देवत प्रोक्षण आदि होता है फिर उन ब्राह्मण आदि को पर्यग्नि करके देवतोद्देश से त्याग करै फिर उन सब को यूपों से अलग कर छोड़ देवै फिर अध्वर्यु घृत का संस्कार करके एक वार लिये हुए घृत को लेकर (ॐ पुरुष देवाभ्यो ब्रह्मादिभ्यः) इन मंत्रों से आहवनीय अग्नि में होम करै ॐ ब्रह्मणे स्वाहा १ क्षत्राय स्वाहा २ मरुद्भ्यः ३ तपसे ४ तमसे ५ इत्यादि ८४ घृताहुति देवताओं को देकर स्विष्टकृत आदि उदवसानीय तक कर्म करके फिर यजमान (अयंते योनिः) इस मंत्र से अग्नियों को अपने आत्मा में समारोपण कर (अद्भ्यः सम्भृतं) इन ६ ऋचा के अनुवाक से सूर्य का उपस्थान कर फिर न देखता बन में जाकर वास करै यदि पुरुष मेध के पीछे ग्राम में वसने की इच्छा होय तौ उदवसानीय के अन्त में सायंकाल पर आहुतियों को होम कर अरणी में अग्नियों को समारोपण कर महानारायण रूप से सूर्य का उपस्थान कर गृह में जावै और अग्नि स्थापन करै यथेच्छ यज्ञों को भी करै अर्थात् द्रव्य यज्ञ के पीछे गृहवास और अध्यात्म यज्ञ के पीछे सन्यास है। २२

अथाध्यात्मम्–१ तिस के पीछे २ इन ३ आठ ४ परस्पर विरुद्ध रूपों को ५ नियुक्त करता है उनको कहते हैं ६ प्रधान रूप शरीर ७ और ८ विराजोत्पत्ति कारण कर्म समूह ९ और १० विराट् देह ११ और १२ अति सूक्ष्म हिरण्य गर्भ शरीर १३ और १४ विष्णोपाधि १५ और १६ रुद्रोपाधि १७ और १८ यती रूप अवतारों की देहोपाधि १९ और २० गृहस्थादि अवतारों की देहोपाधि २१ और २२ वे २३ ईश रूप होने से अदास २४ और प्रधान रूप होने से अब्राह्मण हैं वे २५ ब्रह्म देवता वाले हैं २६ माया गौरव का धारक समष्टि मन २७ पुरुष की शक्ति होकर भी प्रधान कार्य ब्रह्मांड में व्याप्त समष्टि बुद्धि २८ माया पाशों से द्यूत कारक समष्टि चित्त २९ ब्रह्म प्राप्ति में पुरुषार्थ हीन देहाभिमान रूप अहंकार ३० ये ३१ ईशांग रूप होने से अदास ३२ और प्रधान रूप होने से अब्राह्मण हैं ३३ वे ३४ ब्रह्म देवता वाले हैं ॥ २२॥

इति श्री भृगु वंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म कृते यजुर्वेदीय ब्रह्म भाष्ये नर मेध पशु वर्णनं नाम त्रिंशोऽध्यायः ३०

ओंनारायणंनमस्कृत्यनरञ्चैवनरोत्तमम् देवीं सरस्वतीं व्यासं ततोजय मुदीरयेत् अब उपासना कांड को कहते हैं·

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि ँ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥१॥

पुरुषः। सहस्रशीर्षा। सहस्राक्षः। सहस्रपात्। सः। भूमिम्। सर्वतः। स्पृत्वा। दशाङ्गुलम्। अति। अतिष्ठत्॥ १॥

ओं सहस्रशीर्षेत्यस्य(नारायणऋषिः निचृदार्ष्यनुष्टुप्छन्दः पुरुषो देवता) १

पदार्थः—१ सब लोकों में व्याप्त जो महानारायण २ सर्वात्मा होने से अनन्त शिर वाला ३ अनन्त नेत्र वाला ४ अनन्त पाद वाला है ५ वह ६ व्यष्टि समष्टि रूप स्थान को ७ तिरछा ऊंचा नीचे ८ व्याप्त करके ९ नाभि से दशाङ्गुल परिमित देश हृदय को १० अतिक्रमण कर ११ अंतर्यामी रूप से स्थित हुआ १

पुरुष एवेद ँ सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ २॥

इदम्। यत्। भूतम्। च। यत्। भाव्यम्। उत। यत्। अन्नेन। अतिरोहति। सर्वम्। अमृतत्वस्य। ईशानः। पुरुषः। एव॥ २॥

ओं पुरुष इत्यस्य(विनियोगः पूर्ववत्—

पदार्थः—१ यह २ जो ३ अतीत ब्रह्म संकल्पज जगत है ४ और ५ जो ६ भविष्य ब्रह्म संकल्पज जगत है ७ और ८ जो जगत् ९ वीज वा अन्न परिणाम वीर्य से १० वृक्ष नर पशु आदि रूप प्रकट होता है वह ११ सब १२ मोक्ष का १३ स्वामी १४ महानारायण १५ ही है उसका अन्य न होने से॥ २॥

एतावानस्य महिमातोज्यायांश्च पूरुषः। पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि॥ ३॥

अस्य। महिमा। एतावान्। च। पुरुषः। अतः। ज्यायान्। वि-

श्वा। भूतानि। अस्य। पादः। दिवि। अस्य। त्रिपात्। अस्य। अमृतम्।

ॐ एतावानित्यस्य (विनि योगः पूर्ववत्—

पदार्थः—१ इस महानारायण की २ विभूति ३ इतनी है यह नहीं ४ चिदात्मा ५ महानारायण ६ इस संसार से ७ अतिशय अधिक है जिस कारण ८ सव ९ ब्रह्मांड १० इस महानारायण का ११ चतुर्थांश है १२ गोलोक में १३ इस १४ त्रिपाद का स्वरूप १५ विनाश रहित है जिस कारण अनन्त ब्रह्म ही अपने भाग में अपनी ज्योति द्वारा महानारायण रूप हुआ ॥ ३॥

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४॥

त्रिपात्। पुरुषः। ऊर्ध्वः। उदैत्। पुनः। अस्य। पादः। इह। अभवत्। ततः। विष्वङ्। साशनानशने। अभि। व्यक्रामत ॥ ४॥

ॐ त्रिपादूर्ध्व इत्यस्य (नारायणऋषिः आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता) १

पदार्थः—१, २ महानारायण ३ ब्रह्मांड से ऊर्ध्व ४ उत्कर्ष पूर्वक स्थित हुआ ५ फिर ६ इस महानारायण का ७ चतुर्थांश ८ इस संसार में ९ व्याप्त हुआ १० माया में प्रवेश के अनन्तर ११ देवता तिर्यक् आदि रूप से नाना रूप वाला होता १२ चराचर जगत को १३ देख कर १४ व्याप्त करता भया ॥ ४॥

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ५

ततः। विराट्। विराजः। पुरुषः। अधि। अजायत। सः। जातः। अत्यरिच्यत। पश्चात्। भूमिम्। अथो। उ। पुरः ॥ ५॥

ॐ तत इत्यस्य विनि योगः पूर्ववत्—

पदार्थः—१ उस महानारायण से २ ब्रह्मांड देह तथा ३ उस देह का अभिमानी ४ पुरुष ५ उसी देह को अधिकरण करके ६ प्रकट हुआ ७ वह ८ उत्प-

स्वविराट् पुरुष ९ श्रेष्ठ हुआ १० पश्चात् ११ भूमि को उत्पन्न किया १२ तदनन्तर १३ ही १४ देव मनुष्य आदि के शरीरों को उत्पन्न किया ॥ ५॥

यस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम्। पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥ ६॥

तस्मात्। यज्ञात्। सर्वहुतं।। पृषदाज्यम्। सम्भृतम्। तान्। वायव्यान्। पशून्। चक्रे। ये। आरण्याः। च। ग्राम्याः। ६॥

ओं तस्मादित्यस्य (नारायण ऋषिः आर्चीपंक्तिश्छंदः पुरुषो देवता) १

पदार्थः– १ उस २ महा नारायण से ३ यज्ञ ४ दधिमिश्र आज्य वा प्राण ५ सम्पादित हुआ तथा उस महानारायण ने ६ उन ७ वायु वा प्राण रूप देवता वाले ८ पशुओं को ९ उत्पन्न किया १० जो ११ हरिण आदि वन वासी वा आरण्य कांड सम्बंधी इन्द्रियां १२ और १३ अश्व आदि ग्राम वासी वा प्रवृत्त मार्ग सम्बंधी इन्द्रियां हैं॥ ६॥

तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ ७॥

तस्मात्। सर्वहुतः। यज्ञात्। ऋचः। सामानि। जज्ञिरे। तस्मात्। छन्दांसि। जज्ञिरे। तस्मात्। यजुः। अजायत॥ ७॥

ओं तस्मादित्यस्य (नारायण ऋषिः आर्ष्यनुष्टुप् छंदः पुरुषो देवता) १

पदार्थः– १ उस २ सर्वलय स्थान ३ यज्ञ पुरुष महानारायण से ४ ऋग्वेद ५ साम वेद ६ उत्पन्न हुए ७ उस महा नारायण से ८ छन्द ९ उत्पन्न हुए १० उस महानारायण से ११ यजुर्वेद १२ प्रकट हुआ॥ ७॥

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ ८॥

तस्मात्। अश्वाः। ये। के। च। उभयादतः। अजायंत। ह। तस्मा

त्। गावः। जज्ञिरे। तस्मात्। अजावयः। जाताः॥ ८॥

ॐतस्मादित्यस्य (नारायणऋषिः निचृदार्ष्यनुष्टुप्छन्दः पुरुषो देवता) १

पदार्थः–१ उस महानारायण से २ अश्व ३ और ४ जो ५ कोई दूसरे पशु ६ नीचे ऊपर के दांत वाले हैं ७ उत्पन्न हुए ८ और ९ उस महानारायण से १० गौ बैल ११ उत्पन्न हुए १२ उस महानारायण से १३ भेड़ बकरी १४ उत्पन्न हुईं ८

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ ९॥

ये। साध्याः। देवाः। च। ऋषयः। अग्रतः। जातम्। तम्। यज्ञम्। पुरुषम्। बर्हिषि। प्रौक्षन्। तेन। अयजन्त॥ ९॥

ॐतं यज्ञमित्यस्य (विनियोगः पूर्ववत्–

पदार्थः–१ जो २,३ साध्य देवता ४ और ५ सनकादि ऋषि हैं उन्होंने ६ सृष्टि के पूर्व ७ उत्पन्न ८ उस ९ यज्ञ साधन भूत १० विराट् पुरुष को ११ आत्मलोक में १२ प्रोक्षण किया १३ उस विराट् रूप पशु द्वारा १४ मानसयाग को निष्पादन किया॥ ९॥

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ १०॥

यत्। पुरुषम्। व्यदधुः। कतिधा। व्यकल्पयन्। अस्य। मुखम्। किम्। आसीत्। किम्। बाहू। ऊरू। किम्। पादौ। उच्येते॥ १०॥

ॐयत्पुरुषमित्यस्य (विनियोगः पूर्ववत्–

पदार्थः–प्रश्न १ जब २ विराट् पुरुष को ३ महानारायण से प्रेरित महत् अहंकार आदि ने उत्पन्न किया तब ४ कितने प्रकारों से ५ कल्पित किया ६ इस विराट् पुरुष का ७ मुख ८ कौन ९ हुआ १० कौन ११ भुजा १२ ऊरू हुए १३ कौन १४ पाद १५ कहे जाते हैं॥ १०॥

मतिविंबं (अन्तकाय) (म्वनिनम्) विषयवासनायाः पालकमात्ममतिविंबं ॥ ७ ॥

ऽोनदीभ्य इत्यस्यनारायणऋषिःकृतिश्छन्दोद्रव्यं दैवतम् १ **मंत्रार्थः** —(नदीभ्यः) (पौञ्जिष्ठम्) पुञ्जिष्ठोऽन्त्य-
जः पुल्कसस्तदपत्यम् ३१ (ऋक्षीकाभ्यः) (नैषादम्) निषादपुत्रम् (पुरुषव्याघ्राय) (दुर्मदम्) उन्मत्तम् ३३ (गन्ध-
र्वाप्सरोभ्यः) (व्रात्यम्) सावित्रीपतितम् ३४ (मयुग्भ्यः) (उन्मत्तम्) ३५ (सर्पदेवजनेभ्यः) (अप्रतिपदम्) प्रतिप-
द्यतेजातानीति प्रतिपत् अनयाविधं विकलमित्यर्थः ३६ (अयेभ्यः) (कितवम्) द्यूतकारम् ३७ (ईर्य्यतायै) (अकि-
तवम्) अद्यूतकृतम् (पिशाचेभ्यः) (विदलकारीम्) वंशविदारिणीं वंशपात्रकारिणीम् ३९ (यातुधानेभ्यः)

नदीभ्यः पौञ्जिष्ठमृक्षीकाभ्यो नैषादम्पुरुषव्याघ्राय दुर्मदङ्गन्धर्वाप्स
रोभ्यो व्रात्यम्प्रयुग्भ्य उन्मत्तꣳ सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदमयेभ्यः कि
तवमीर्यताया अकितवम्पिशाचेभ्यो विदलकारीं यातुधानेभ्यः कण्ट
कीकारीम् ॥ ८ ॥

(कण्टकीकारीम्) कण्टकीकर्मतत्कारिणीम् ४० — ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् —(नदीभ्यः) (पौञ्जिष्ठम्) पुंपुरुषंजयतीति पुञ्जिर्देहस्तस्मिन्तिष्ठतीति पुञ्जिष्ठो नाडीसमू-
हस्तासुजातोऽन्तरसः पौञ्जिष्ठस्तम् (ऋक्षीकाभ्यः) ऋक्षतुल्यहिंसकेभ्यः रुद्रेभ्यः । इवार्थे ईकन् (नैषादम्) नि-
रंतरं सीदति पापमत्र स निषादो देहस्तस्य पुत्रोऽहंकारो नैषादस्तं (पुरुषव्याघ्राय) पुरुषेषु रुद्रेषु व्याघ्राय व्याघ्र-
वद्धिंसकाय रुद्रविशेषाय (दुर्मदम्) दुष्टमदम् (गन्धर्वाप्सरोभ्यः) (व्रात्यम्) ग्रामयोग्यं नृत्यादि सुखम् (प्रयुग्भ्यः)

संसारे संयोग बध्यो देवेभ्यः। युजबन्धने (उन्मत्तम्) उन्मत्तं मनो वृत्तिविशेषं (सर्प देवजनेभ्यः) देव मनुष्य सम्बन्धिलोकेभ्यः। सर्पा वैलोका इति श्रुतेः (अप्रतिपदम्) अज्ञानम् (अयेभ्यः) हिरण्येभ्यः (कितवम्) द्यूतकारं मनो वृत्तिविशेषम् (ईर्यतायै) ध्यानमौनादिकचर्यायै (अकितवम्) अद्यूतकारं मनो वृत्तिविशेषम् (पिशाचेभ्यः) (विदलकारीम्) अद्वैतखंडिनीं बुद्धि वृत्तिम् (यातुधानेभ्यः) (कराटकीकारीम्) हिंसाकर्मकारिणीं बुद्धि वृत्तिम् ॥ ८ ॥

ॐ सन्धयइत्यस्य नारायणऋषिर्भुरिगत्यष्टिश्छन्दो द्रव्यं देवतम् १।

मंत्रार्थः-(सन्धये) (जारम्) उपपतिम्-४१ (गेहाय) (उपपतिम्) व्यभिचारिणम् ४२ (आर्त्यै) (परिवित्तम्) ऊढे-

स॒न्धये॑ जा॒रङ्गे॒हायो॑पप॒तिमार्त्यै॒ परि॑वित्तन्निर्ऋ॑त्यै परिविवि॒दान॒मरा॑द्ध्याऽएदिधिषुः॒ प॒तिन्निष्कृ॑त्यै पेशस्का॒री छँ सं॒ज्ञाना॑य स्मरका॒रीम्प्रकामो॒द्याय॑ोप॒सद॒ं वर्णा॑यानु॒रुध॒म्बला॑यो॒पदाम् ९

कनिष्ठे ऽनूढम् ४३ (निर्ऋत्यै) (परिविविदानम्) अनूढे ज्येष्ठे ऊढवन्तम् ४४ (आराद्ध्यै) देव्यै (एदिधिषुः पतिम्) ज्येष्ठायां पुत्र्यामनूढायामूढा एदिधिषुः तत्पतिम् ४५ (निष्कृत्यै) (पेशस्कारीम्) रूपकर्त्रीम् ४६ (सञ्ज्ञानाय) (स्मरकारीम्) कामदीप्तिकरीम् ४७ (प्रकामोद्याय) तत्सञ्ज्ञाय देवाय (उपसदम्) समीपास्थितं ४८ एतानग्निष्ठे नियुनक्ति अथ द्वितीये यूपे (वर्णाय) (अनुरुधम्) अनुसरम् १ (बलाय) (उपदाम्) उपददातीत्युपदास्तमुपायनदातारम् २ ॥ ९ ॥ **अथाध्यात्मम्**-(सन्धये) संजीवाधियति सा सन्धिः परा तस्यै। धिघ्नतो (जारम्) जजन्म तं समन्तात् रातिददाति कर्मम् (गेहाय) ब्रह्माण्डाय (उपपतिम्) व्यभिचारिणमात्म प्रति विंबं (आर्त्यै)

आर्त्ति रूपाया अपरायै (परि[६]वित्तम्) देहस्य परित्यागम्। वित्त त्यागे (निर्[७]ऋत्यै) निर्गतम शुभमस्यास्तस्मै-परा शक्त्यै (परि[८]वि[१०]विदानम्) समन्ताद्विशेषेणात्मशक्तीनां विविधं दानम् ([९]आराद्ध्यै) आराधन योग्यै पराशक्त्यै (एदिधिषुःपतिम्) सांसरिक वुद्धेः पतिमात्ममति विंवम्। एध वृद्धौ (नि[११]ष्कृत्यै) निर्मुक्त्यै (पे[१२]शस्कारीम्) रूप कर्त्रीजीव रूपशक्तिम् (सन्[१३]ज्ञानाय) व्रह्मज्ञानाय (स्म[१४]रकारीम्) कामदीप्ति[१७] करी वुद्धिम् (प्र[१५]कामोद्याय) कामप्रतिपादक [१६]शास्त्राय (उपसदम्) तत्समीपस्थमनोवृत्ति विशेषं (वर्णाय) रक्तश्यामश्वेत वर्णाय परमेश्वराय [१८](अनुरुधम्) आराध्यादेरिष्ट सम्पादनेच्छा रूप मनोवृत्ति विशेषम् ([१९]वलाय) विराड् रूपाय (उप[२०]दाम्)

उत्सादेभ्यः कुब्जमप्रमुदे वामनन्द्वार्भ्यः स्रामᳯं स्वप्नायान्धमधर्माय वधिरम्पवित्राय भिषजम्प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शमाशिक्षायै प्रश्निनमुपशिक्षाया अभिप्रश्निनम्मर्यादायै प्रश्नविवाकम्॥ १०॥

उपायनदातारमिन्द्रियसमूहं॥ ९॥ ओं उत्सादेभ्यइत्यस्य विनियोगः पूर्ववत् १

मंत्रार्थः-([१]उत्सादेभ्यः) ([२]कुब्जम्) वक्राङ्गम् ३ (प्रमुदे) ([३]वामनम्) ह्रस्वांगम् ४ ([५]द्वार्भ्यः) ([६]स्रामम्) सर्वदाजलक्लिन्न नेत्रम् ५ (स्वप्नाय) (अन्धम्[८]) नेत्रहीनम् ६ (अधर्माय[९]) (वधिरम्[१०]) कर्णेन्द्रिय हीनम् ७ (पवि[११]त्राय) (भिषज[१२]म्) वैद्यम् ८ (प्रज्ञा[१३]नाय) (नक्षत्र[१४]दर्शम्) गणकम् ९ (आशिक्षा[१५]यै) (प्रश्निनम्[१६]) प्रष्टव्यन्तं शकुनादि प्रष्टारम् १० (उपशिक्षायै[१७]) (अभिप्रश्नि[१८]नं) अभिप्रश्नवन्तम ११ अथ तृतीये यूपे (मर्या[१९]दायै) (प्रश्नविवाकम्) कृतान्प्रश्नान्यो विविनक्ति ब्रूते तम् १२ -॥ १०॥

अध्याध्यात्मम्-(उत्सादेभ्यः) परित्यागेभ्यः (कुब्जम्) (क) देहः (उ) मनः (व) प्राणस्तेभ्योऽजनितम् विषयम् (प्रमुदे) आनन्दस्वरूपाय ब्रह्मणे (वामनम्) विष्णुविकारभूतमात्मप्रतिबिंबम् (द्वार्भ्यः) कूमलेभ्यः (स्नामम्) योगेनगतिमन्तमात्मप्रतिबिंबम् (स्वप्नाय) (अन्धम्) विवेकनेत्रहीनं बुद्धिवृत्तिविशेषं (अधर्माय) (बाधिरम्) धर्मशास्त्रश्रवणरहितं श्रोत्रवृत्तिविशेषम् (पवित्राय) आत्माने (भिषजम्) संसाररोगनाशकं ज्ञानम् (प्रज्ञानाय) ज्ञानस्वरूपाय ब्रह्मणे (नक्षत्रदर्शम्) क्षतात्संसारबन्धनान्त्ररक्षातितस्याज्ञानस्य दर्शकं ज्ञानम् (आशिक्षायै) (प्राश्निनम्) अध्यात्मसम्बन्धिप्रश्नकर्त्तारं मनोवृत्तिविशेषम् (उपशिक्षायै) (अभिप्राश्निनम्) आधिदैवसम्बन्धिप्रश्नकर्त्तारं मनोवृत्तिविशेषम् (मर्यादायै) (प्रश्नविवाकम्) आधिभूतसम्बन्धिप्रश्नवक्तारं मनोवृत्तिविशेषम् ॥ १० ॥

अर्मेभ्यो हस्तिपञ्जवायाश्वपम्पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालन्तेजसेऽज पालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारम्भद्राय गृहपं श्रेयसे वित्तधमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम् ॥ ११ ॥

ॐ अर्मेभ्य इत्यस्य नारायणऋषिर्विराडष्टिश्छन्दो द्रव्यं देवतम् १

मंत्रार्थः-(अर्मेभ्यः) (हस्तिपम्) गजपालकम् २ (जवाय) (अश्वपम्) तुरगपालकम् ३ (पुष्ट्यै) (गोपालम्) धेनुपालकम् ४ (वीर्याय) (अविपालम्) ५ (तेजसे) (अजपालम्) ६ (इरायै) (कीनाशम्) कर्षुकम् ७ (कीलालाय) (सुराकारम्) मद्यकारम् ८ (भद्राय) (गृहपम्) गेहपालकम् ९ (श्रेयसे) (वित्तधम्) धनकर्त्तारम् १० (आध्यक्ष्याय) अनुक्षत्तारम्) सारथ्यनुसारिणम् ११—॥ ११ ॥

१२४५ **अथाध्यात्मम्** –(अर्भेभ्यः) (अ) विष्णुः (र) रुद्रः (म) ब्रह्मा तेभ्यः (हस्तिपम्) हस्तितुल्यस्य देहस्य पाल-
कमात्मप्रतिबिंबं (जवाय) वायोर्वेगाय (अश्वपम्) इन्द्रियाणां पालकं प्राणम् इन्द्रियाणि हयानाहुरिति श्रुतेः (पु-
ष्ट्यै) योगपुष्ट्यै (गोपालम्) इन्द्रियाणां पालकं मनः (वीर्याय) योगबलाय (अविपालम्) विशेषेण जाठराग्नेः रक्ष-
कं प्राणं (तेजसे) समष्ट्यग्नये (अजपालम्) वाचां रक्षकं वागेन्द्रियम्। वाग्वा ऽ अजः श० ७।५।२।२१ (इरायै) पृथि-
व्यै (कीनाशम्) कर्षुकं मनोवृत्तिविशेषम् (कीलालाय) अमृताय (सुराकारम्) देहासक्तं भूतात्मानम्। शरी-
रं सुराग्रहाः श० १२।७।३।१६ (भद्राय) कल्याणरूपाय परमेश्वराय (गृहपम्) शरीररूपदेहस्य पालकमा-

भायै दार्वाहारम्प्रभाया अग्न्येधम्ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारन्देवलोकाय पेशितारम्मनुष्यलोकाय प्रकरितार ꣳ सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमवऋत्यै वधायोपमन्थितारम्मेधाय वासः पल्पूलीम्प्रकामाय रजयित्रीम्।१२।

त्मप्रतिबिंबम् (श्रेयसे) (वित्तधम्) धनदातारं पुण्यकर्मसमूहम् (आध्यक्ष्याय) अनुभवाय (अनुक्षत्तारम्) म-
नः यथा श्रुतिः कठोपनिषदि आत्मान ꣳ रथिनं विद्धि शरीर ꣳ रथमेव तु बुद्धिन्तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च इन्द्रि-
याणि हयानाहुर्विषया ꣳ स्तेषु गोचरान् आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः॥११॥
ॐ भाया इत्यस्य नारायण ऋषिर्विराट् संकृतिश्छन्दो द्रव्यं दैवतम् १ **मंत्रार्थः** – अथ चतुर्थे यूपे (भायै)
(दार्वाहारम्) काष्ठानामाहर्त्तारम् १ (प्रभायै) (अग्न्येधम्) अग्नेर्वर्धकम् २ (ब्रध्नस्य) (विष्टपाय) सूर्यलोकाय

अभिषेक्तारम्) ३ (वर्षिष्ठाय) (नाकाय) उत्कृष्टस्वर्गाय (परिवेषण कर्त्तारम्) ४ (देवलोकाय) (पेशितारम्) पिश अवयवे पिंशतीति पेशिता तम् प्रतिमाद्यवयव कर्त्तारम् ५ (मनुष्यलोकाय) (प्रकरितारम्) कृ विक्षेपे विक्षेप्तारम् ६ (सर्वेभ्यः) (लोकेभ्यः) (उपसेक्तारम्) उपसेचन कर्त्तारम् ७ (अवऋत्यै) (वधाय) (उपमन्थितारम्) उपमन्थन कर्तारम् ८ (मेधाय) (वासः) (पल्पूलीम्) वाससां प्रक्षालन कर्त्तारम्। पल्पूल प्रक्षालनच्छेदन योः ९ (प्रकामाय) (रजयित्रीम्) वस्त्राणां रङ्ग कारिणीं नारीम् १० — ॥ १२॥

अथाध्यात्मम्- (भीयै) ब्रह्मज्योतिषे (दार्वाहारम्) प्राणानामाहर्त्तारम् जीवात्मानम्। श० प्राण एवास्येध्मः

ऋतये स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तारमौपद्रष्ट्र्यायानुक्षत्तारं बलायानुचरं भूम्ने परिष्कन्दं प्रियाय प्रियवादिनमरिष्ट्या अश्वसादं स्वर्गाय लोकाय भागदुघं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् १३॥

११।२।५।२ (प्रभीयै) महानारायणज्योतिषे (अग्न्येधम्) प्राणम् (ब्रध्नस्य) (विष्टपाय) सूर्यलोकाय (अभिषेक्तारम्) नेत्रम् (वर्षिष्ठाय) (नाकाय) इन्द्रलोकाय (परिवेषण कर्त्तारम्) हस्तेन्द्रियम् (देवलोकाय) (पेशितारम्) देहस्यावयव कर्त्तारमिन्द्रियसमूहम् (मनुष्यलोकाय) (प्रकरितारम्) विक्षेप्तारं देहम् (सर्वेभ्यः) (लोकेभ्यः) (उपसेक्तारम्) उपसेचन कर्त्तारं विषयम् (अवऋत्यै) मृत्युभार्यायै (वधाय) लोकसंहाराय (उपमन्थितारम्) तमोगुणम् (मेधाय) योगयज्ञाय (वासः) (पल्पूलीम्) देहरूपग्रहस्य छेदन कर्त्रीं सत्वप्रधानां बुद्धिम् (प्रकामाय) कामदेवाय (रजयित्रीम्) इन्द्रियाणां रङ्ग कारिणीं रजः प्रधानां बुद्धिम् ॥ १२॥

 ॐ ऋतयइत्यस्यनारायणऋषिः कृतिश्छन्दो द्रव्यं दैवतम्-

मंत्रार्थः-(ऋतये)(स्तेनहृदयम्) स्तेनस्येव हृदयं यस्य तम् ११ अथ पञ्चमेयूपे (वैर हत्याये)(पिशुनम्) पर वृत्त सूचकम् १ (विविक्त्यै)(क्षत्तारम्) प्रतीहारम् २ (औपद्रष्ट्याय)(अनुक्षत्तारम्) प्रतिहारसेवकम् ३ (बलाय)(अनुचरम्) सेवकम् ४ (भूम्ने)(परिष्कन्दम्) परितः स्कन्दति रेतः सिञ्चतितम् ५ (प्रियाय)(प्रिय वादिनम्) मधुर भाषिणम् ६ (अरिष्ट्यै)(अश्वसादम्) अश्वारोहम् ७ (स्वर्गाय)(लोकाय)(भागदुघम्) विभाग प्रदम् ८ (वर्षिष्ठाय)(नाकाय)(परिवेष्टारम्) ९ —॥ १३॥ **अथाध्यात्मम्**- (ऋतये) निन्दायै (स्तेन हृदयम्) कामम् (वैर हत्याये)

मन्यवेऽयस्तापङ्क्रोधायनिसरं योगाय योक्तारꣳ शोकायाभिसर्तारं
क्षेमाय विमोक्तारमुत्कूलनिकूलेभ्यस्त्रिष्ठिनं वपुषे मानस्कृतꣳ शीला
याञ्जनीकारीन्निर्ऋत्यै कोशकारीं यमायासूम १४॥

(वैररूप हत्याय) पिशुनम् पर वृत्त सूचकं मनो वृत्ति विशेषम् (विविक्त्यै) विवेकरूपायै देव्यै (क्षत्तारम्) सत्त्वाम् (औपद्रष्ट्याय) साक्षीरूपाग्नेः पुत्राय वागेन्द्रियाय (अनुक्षत्तारम्) व्यष्टि वागेन्द्रियम् यथा श्रुतिः अग्निर्वा उपद्रष्टा वायुरुपश्रोतादित्योऽनुख्याता तैत्ति० (बलाय) योग बलाय (अनुचरम्) मनः (भूम्ने) आनन्द स्वरूप ब्रह्मणे (परिष्कन्दम्) परितो गति मन्तं जीवात्मानम् (प्रियाय) इष्टदेवाय (प्रिय वादिनम्) भक्तम् (अरिष्ट्यै) अविनाशिन्यै पराशक्त्यै (अश्वसादम्) प्राणारोहमात्मप्रतिबिंबं (स्वर्गाय)(लोकाय)(भागदुघम्) पुण्यं कर्म (वर्षिष्ठाय)(नाकाय)(परिवेष्टारम्) यत्नम्॥ १३॥ ॐ मन्यव इत्यस्य नारायणऋषिर्भुरिगत्यष्टिश्छन्दो द्रव्यं देवतम्॥

मंत्रार्थः—(मन्यवे) (अयस्तापम्) लोहतापकम् १० (क्रोधाय) (निसरम्) नितरां सर्त्तारम् ११ अथ षष्ठे यूपे (योगाय) योक्तारम्) योग कर्त्तारम् १ (शोकाय) (अभिसर्त्तारम्) सन्मुखमागच्छन्तम् २ (क्षेमाय) (विमोक्तारम्) विमोचनकरम् ३ (उत्कूलनिकूलेभ्यः) (त्रिष्ठिनम्) त्रिषु तिष्ठतीति त्रिष्ठीनम् विद्यादिषु स्थितं शीलवन्तम् ४ (वपुषे) (मानस्कृतम्) पूजाया अभिमानस्य वा कर्त्तारम् । सकच्छान्दसः ५ (शीलाय) (आञ्जनीकारीम्) अञ्जनविद्याकर्त्रीम् ६ (निर्ऋत्यै) (कोशकारीम्) खड्गाद्यावरणं कोशस्तत्कारिणीं स्त्रियम् ७ (यमाय) (असूम्) न सूते सा असूः ताम् वन्ध्याम् ८—॥ १४ ॥ अथाध्यात्मम्—(मन्यवे) अहङ्काराय (अयस्तापम्) वन्हेस्तापकं क्रोधम् (क्रोधाय) (निसरम्)

यमायँयमसूमथर्वभ्योऽवतोकाथंसम्वत्सरायपर्यायिणीम्परिवत्सराया
विजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सरायविजर्जरां
सम्वत्सरायपलिक्नीमृभुभ्योऽजिनसन्धथंसाध्येभ्यश्चर्मम्नम् १५

नितरां गमनशीलं चलं चित्तं (योगाय) (योक्तारम्) योगकर्त्तारं मनः (शोकाय) (अभिसर्त्तारम्) सन्मुखमागच्छन्तम् ज्ञानम् (क्षेमाय) (विमोक्तारम्) विमोचनकर्त्तारं ज्ञानम् (उत्कूलनिकूलेभ्यः) ऊर्ध्वाधः क्रमलेभ्यः (त्रिष्ठिनम्) त्रिषु देहेषु स्थितं जीवात्मानं (वपुषे) देहाय (मानस्कृतम्) अभिमानस्य कर्त्तारं मनोवृत्तिविशेषम् (शीलाय) (आंजनीकारीम्) ज्ञानाञ्जनविद्याकर्त्रीं बुद्धिवृत्तिम् (निर्ऋत्यै) अधर्मभार्यायै (कोशकारीम्) हिंसारूपखड्गावर्णकोशस्तत्कारिणीं बुद्धिवृत्तिम् (यमाय) (असूम्) वर्णाश्रमकर्मफलरहितां मनोवृत्तिम् ॥ १४ ॥

ओं यमायेत्यस्य नारायणऋषिः स्वराडतिधृतिश्छन्दो द्रव्यं देवतम्— **मंत्रार्थः**—(यमाय) (यमसूम्) युग्म-

असविद्रीम् ९ (अथर्वभ्यः) (अवतोकाम्) निरपत्याम् १० (सम्वत्सराय) (पर्यायिणीम्) पर्यायोऽनुक्रमस्तद्वतीमनुक्रमत्ताम् ११ अथ सप्तमे यूपे (परिवत्सराय) (अविजाताम्) अप्रसूताम् १ (इदावत्सराय) (अतीत्वरीम्) अत्यन्तं कुलटाम् २ (इद्वत्सराय) (अतिष्कद्वरीम्) अतिस्कन्दति स्रवति इत्यतिस्कद्वरीम्। स्कन्देर्वनिनन्तात् ङीब्रेफौ ३ (वत्सराय) (विजर्जराम्) शिथिलशरीराम् ४ (सम्वत्सराय) (पलिक्नीम्) श्वेतकेशाम् ५ (ऋतुभ्यः) (अजिनसन्धम्) चर्मसन्धातारम् ६ (साध्येभ्यः) (चर्मम्नम्) चर्माभ्यासकरम् ७ — ॥ १५ ॥

अथाध्यात्मम् — (यमाय) (यमसूम्) द्वैतोत्पादकवुद्धिवृत्तिम् (अथर्वभ्यः) प्राणेभ्यः। प्राणो वा अथर्वा श०

सरौभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो वैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलम्पाराय मार्गारमवाराय कैवर्तं तीर्थेभ्य आन्दं विषमेभ्यो मैनालꣳ स्वनेभ्यः पर्णकङ्गुहाभ्यः किरातꣳ सानुभ्यो जम्भकम्पर्वतेभ्यः किम्पू

६।४।२।१ (अवतोकाम्) निर्वीजां जीवशक्तिम् (सम्वत्सराय) ईश्वराय। सम्वत्सरो वै प्रजापतिः श० १०।२।४।१ (पर्यायिणीम्) यन्त्रानुक्रमत्तां वुद्धिवृत्तिम् (परिवत्सराय) विष्णवे (अविजाताम्) निर्वासनां वुद्धिवृत्तिम् (इदावत्सराय) ब्रह्मणे (अतीत्वरीम्) अतिगतिशीलां वुद्धिवृत्तिम्। इण गतौ — क्वरप् (इद्वत्सराय) शिवाय (अतिष्कद्वरीम्) देहाभिमानात्स्कन्दनशीलां वुद्धिवृत्तिम् (वत्सराय) आत्मने श० १२।३।२ (विजर्जराम्) शिथिलां वुद्धिवृत्तिम् (सम्वत्सराय) अन्तर्यामिने (पलिक्नीम्) वृद्धां वुद्धिवृत्तिम् (ऋतुभ्यः) देवेभ्यः (अजिनस

न्धम्) मृगचर्म धारकं योगपरायणं मनो वृत्ति विशेषम् (साध्येभ्यः[१९]) देवेभ्यः (चर्मम्नम्[२०]) (च) चतुर्मुखः (अ) विष्णुः (र) रुद्रः (म) महामाया पराशक्तिस्तेषां ध्यानाभ्यासकरं मनो वृत्तिम् ॥ १५ ॥

ओं सरोभ्य इत्यस्य नारायणऋषिर्भुरिगतिधृतिश्छन्दो द्रव्यं दैवतम्

मंत्रार्थः–(सरोभ्यः[१]) (धैवरम्[२]) कैवर्तापत्यम् ८ (उपस्थावरोभ्यः[३]) (दाशम्[४]) दाश्रृदाने दातारम् धीवरम्वा ९ (वैशन्ताभ्यः[५]) (वैन्दम्[६]) निषादापत्यम् १० (नड्वलाभ्यः[७]) (शौष्कलम्[८]) मत्स्यजीविनम् शुष्कला मत्स्यास्तै

भीभत्सायै पौल्कसम्वर्णाय हिरण्यकारन्तुलायै वाणिजम्पश्चादोषा
यग्लाविनं विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलम्भूत्यै जागरणमभूत्यै स्वपनमा
र्त्यै जनवादिनं व्यृद्ध्याऽअपगल्भꣳ सꣳशराय प्रच्छिदम् १७

र्जीवतीतिम् ११ अथाष्टमे यूपे (पाराय[९]) (मार्गारम्[१०]) मृगारेरपत्यम् १ (आवाराय[११]) (कैवर्तम्[१२]) २ (तीर्थेभ्यः[१३]) (आन्दम्[१४]) अदि बन्धने अदति आन्दस्तं बन्धनकर्तारम् ३ (विषमेभ्यः[१५]) (मैनालम्[१६]) अल वारणे मीनान लति वारयति जालैरसौ मीनालस्तदपत्यम् ४ (स्वनेभ्यः[१७]) (पर्णकम्[१८]) भिल्लम् ५ (गुहाभ्यः[१९]) (किरातम्[२०]) ६ (सानुभ्यः[२१]) (जम्भकम्[२२]) जभि नाशने जम्भयतीति तम् हिंसकम् ७ (पर्वतेभ्यः[२३]) (किम्पुरुषम्[२४]) कुत्सितनरम् ॥ ८–॥ १६ ॥

अथाध्यात्मम्–(सरोभ्यः[१]) मनो वै समुद्रः श० ७।५।२।५२ तस्य पत्न्यो वहिर्मुखानीन्द्रियाणि सरोवररूपाण्यन्तर्मुखानि तु नदीरूपाणि ततस्ताभ्यः सरोरूपाभ्यः (धैवरम्[२]) (ध) वृद्धिः (ऐ) रात्रीतस्याः वरं गुरूपदे

शम्([3]उपस्थावराभ्यः) इष्टदेवसमीपेस्थिरेभ्य इन्द्रियेभ्यः([4]दाशम्) दाशतिददाति परमेश्वरस्यदर्शनादिकंतंभक्ति
भावम् दाश दाने([5]वैशन्ताभ्यः) इष्टदेवेप्रवेशकारकेन्द्रिय समूहस्य शक्तिभ्यः([6]वैन्दम्) विदन्ति मोक्षलाभं करोति
यस्मिन्तं योगैश्वर्यम् विदलाभे([7]नड्वलाभ्यः) विषयरूपतृण युक्ताभ्यः([8]शौष्कलम्)(श) शान्तिः([9]औ) सरस्व-
ती(ष) प्रज्ञा(क) सुखंब्रह्मानन्दंतान् लाति गृह्णाति तन्मनः(पाराय) मनः समुद्रस्योत्तरतीराय([10]मार्गारम्) योग
मार्गस्यसमन्ताद्दातारंज्ञानम्([11]अवाराय) अर्वाक्तीराय([12]केवर्तम्) के परमेश्वरेवर्ततेतमुपासनासम्पन्नंज्ञानम्
([13]तीर्थेभ्यः) तीर्थभावापन्नेन्द्रियेभ्यः([14]आनन्दम्)(आ) योगक्रिया(न) ज्ञाननेत्रंत योर्दातारंभक्तियोगम्([15]विषमेभ्यः)
इन्द्रियेभ्यः([16]मैनालम्)(म) मेधा(ऐ) सरस्वती(न) ज्ञाननेत्रं(आ) योगक्रियाताः लाति गृह्णातितंज्ञान योगम्([17]स्व-
नेभ्यः) अनाहतशब्देभ्यः([18]पर्णकम्) जीवात्मरूपंसुपर्णम्([19]गुहाभ्यः) कमलेभ्यः([20]किरातम्) योगेनाशिव रूपं जीवा-
त्मानम्([21]सानुभ्यः) इन्द्रियगोलकेभ्यः([22]जम्भकम्) हिंसकं विषयकम्([23]पर्वतेभ्यः) स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरेभ्यः
पर्वाणि भागाःसन्ति यस्यसपर्वतः देहः([24]किम्पुरुषम्) कुत्सित रूपेण व्यापकं कामम् एवंहि देहासक्तेर्नाशोभव-
ति ॥१६॥ ओं वीभत्सायइत्यस्यनारायणऋषिर्विराट् धृतिश्छन्दोद्रव्यं दैवतम्-

मंत्रार्थः-([1]वीभत्सायै)([2]पौल्कसम्) पुल्कसापत्यम् ९([3]वर्णाय)([4]हिरण्यकारम्) स्वर्णनिष्पादकम् १०([5]तुलायै)
([6]वानिजम्) वणिगपत्यम् ११ अथनवमे यूपे([7]पश्चादोषाय)([8]ग्लाविनम्) ग्लौ हर्षक्षयेऽस्त्यस्य ह्रष्टम् १([9]विश्वेभ्यः)([10]भूते-
भ्यः)([11]सिध्मलम्) सिध्मारव्य रोगवन्तम् २([12]भूत्यै)([13]जागरणम्) जागरूकम् ३([14]अभूत्यै)([15]स्वपनम्) शयालुम् ४

[१६]आर्त्यै)(जनवादिनम्)[१७] जनान्वदतीतिमम्५(व्यृद्ध्यै)[१८](अपगल्भम)[१९]६(संशराय)[२०](प्रच्छिदम्)[२१] प्रच्छेदनकर्तारम्७ ॥ १७

अथाध्यात्मम्-(वीभत्सायै)[१] निन्दायै(पौल्कसम्)[२](प)पानं(औ)नादः(ल)मांसं(क)कामस्तेषां प्रकाशकं मनोवृत्तिविशेषम्(वर्णाय)[३] चतुर्विधाय वर्णाय(हिरण्यकारम्)[४] आभूषणानिष्पादकं मनोवृत्तिविशेषम्-(तुलायै)[५](वानिजम्)[६] वनिक्वृत्तिम(पश्चादोषाय)[७] आयोरन्तोषाय(ग्लाविनम्)[८] हर्षशून्यं मनोवृत्तिविशेषम्(विश्वेभ्यः)[९](भूतेभ्यः)[१०](सिध्मलम्)[११](स)जीवः(इ)मनः(धा)धारणा(म)मेधा ता लाति गृह्णातीति तं वासनाबीज-

अक्षराजाय कितवङ्कृताया दिनवदर्शन्त्रेतायै कल्पिनन्द्वापराया धिकल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुम्मृत्यवै गोव्यच्छमन्तकाय गोघातङ्क्षुधे यो गां विकृन्तन्तम्भिक्षमाण उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यम्पाप्मने सैलगम् ॥ १८ ॥

म्(भूत्यै)[१२] सम्पत्यै योगैश्वर्यप्राप्त्या(जागरणम्)[१३] गुणं(अभूत्यै)[१४](स्वपनम्)[१५](आर्त्यै)[१६](जनवादिनम्)[१७] वाग्वृत्तिविशेषम्(व्यृद्ध्यै)[१८] विरुद्ध सम्पत्यै(अपगल्भम्)[१९] उत्साहहीनं मनोवृत्तिविशेषम्(संशराय)[२०] सम्यक्‌वाण रूपाय जीवात्मने(प्रच्छिदम्)[२१] संसार वृक्षस्य छेदनकर्त्तारं मनोवृत्तिविशेषम् ॥ १७ ॥

ओं अक्षराजायेत्यस्य नारायणऋषिर्निचृदत्यष्टिश्छन्दो द्रव्यं दैवतम्- **मंत्रार्थः**-(अक्षराजाय)[१](कितवम्)[२] धूर्तम्८(कृताये)[३](आदिनवदर्शम्)[४] आदिनवो दोषस्तं पश्यतीति तथाभूतम्९(त्रेतायै)[५](कल्पिनम्)[६] कल्प

कम् १० [7](द्वापराय) [8](आधिकल्पिनम्) आधिकल्पनाकर्तारम् ११ अथ दशमे यूपे [9](आस्कन्दाय) [10](सभास्थाणुम्) सभायां स्थिरम् १ [11](मृत्यवे) [12](गोव्यच्छम्) गाः प्रतिगमनशीलम् २ [13](अन्तकाय) [14](गोघातम्) गवां हन्तारम् ३ [15](यः) [16](गाम्) [17](विकृन्तन्तम्) छिन्दन्तं [18](भिक्षमाणः) [19](उपतिष्ठति) तम् [20](क्षुधे) देव्यै आलभेत ४ [21](दुःकृताय) (चर-[22]काचार्यम्) चरकाणां गुरुम् ५ [23](पाप्मने) [24](सैलगम्) शील गोदुष्टस्तदपत्यम् ६ ॥ १८ ॥

अथाध्यात्मम् – [1](अक्षराजाय) कलये [2](कितवम्) द्यूतकारक मनोवृत्तिविशेषम् [3](कृताय) कृतयुगाभिमानिने देवाय [4](आदिनवदर्शम्) आदिनः भक्षकस्य कर्मफलस्यावदर्शमवज्ञापूर्वक द्रष्टारं मनोवृत्तिविशे-

प्रति॒श्रुत्का॑या अर्त॒नं घोषा॑य भ॒षमन्ता॑य बहु॒वादि॑नमन॒न्ताय॒ मूकं॒
शब्दा॑याडम्बराघा॒तम्महसे॑ वीणावा॒दं क्रोशा॑य तूणव॒ध्मम्

षम् [5](जैनायै) [6](कल्पिनम्) भुक्तौ रजतत्वमिव तथा ब्रह्माणि मायोपाधेरारोप कर्त्तारं मनोवृत्तिविशेषम् [7](द्वापराय) [8](आधिकल्पिनम्) आधिकमारोप कर्त्तारं मनोवृत्तिविशेषम् [9](आस्कन्दाय) तिरस्काराय [10](सभास्थाणुम्) सभायां जड़ीभूतं बुद्धिवृत्तिविशेषम् [11](मृत्यवे) [12](गोव्यच्छम्) वेदवाचा विमुखं मनोवृत्तिविशेषम् [13](अन्तकाय) [14](गोघातम्) वेदवाचां विरुद्धार्थकरणाद्धन्तारं मनोवृत्तिविशेषम् [15](यः) [16](गाम्) वेदवाचम् [17](विकृन्तन्तम्) विरुद्धार्थकरणाच्छिन्दन्तं धूर्त्तमति [18](भिक्षमाणः) विद्याभिक्षामिच्छन् [19](उपतिष्ठति) तं वृद्धिवृत्तिम् [20](क्षुधे) देव्यै आलभेत [21](दुष्कृताय) पापकर्मणे [22](चरकाचार्यम्) (च) चौरः (ब) कामः (र) कामाग्निः (अ) अहंकारः (क) देहस्तेषामा-

चार्यमनोवृत्तिविशेषम् [23](पाप्मने) [24](सैलगम्) सीरगः कर्षकस्तस्य कृषिकर्म सेरगम् रस्य लत्वम् ॥ १८ ॥

ओंप्रतिश्रुत्कायेत्यस्य नारायणऋषिर्भुरिग्धृतिश्छन्दो द्रव्यं दैवतम् ॥

मंत्रार्थः [1](प्रतिश्रुत्कायै) [2](अर्तनम्) दुःखिनम् ७ [3](घोषाय) [4](भषम्) जल्पकम् ८ [5](अन्ताय) [6](बहुवादिनम्) ९ [7](अनन्ताय) [8](मूकम्) वाग्विकलम् १० [9](शब्दाय) [10](आडम्बराघातम्) आडम्बरमाहन्ति तं कोलाहलकर्तारम् ११ अथैकादशे यूपे [11](महसे) [12](वीणावादम्) वीणावादनकर्तारम् १ [13](क्रोशाय) [14](तूणवध्मम्) तूणवं वाद्यविशेषं धमति तथाभूतम् २ [15](अवरस्पराय) [16](शंखध्मम्) शंखवादकम् ३ [17](वनाय) [18](वनपम्) वनपालकम् ४ [19](अन्यतोरण्याय)

वरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोऽरण्याय दावपम् ॥ १९ ॥ नर्माय पुंश्चलूं हसाय कारिं यादसे शाबल्यांग्रामण्यंगणकमभिक्रोश·

[20](दावपम्) वनवह्निपम् ५ — ॥ १९ ॥ **अथाध्यात्मम्·** [1](प्रतिश्रुत्कायै) प्रतिध्वनिर्देहो यस्यास्तस्यै देव्यै· [2](अर्तनम्) निन्दाम् [3](घोषाय) [4](भषम्) कुक्कुरवद्वृथाजल्पनम् [5](अन्ताय) संसाराय [6](बहुवादिनम्) वाग्वृत्तिविशेषम् [7](अनन्ताय) ब्रह्मणे [8](मूकम्) मौनवृत्तिम् [9](शब्दाय) ब्रह्मशब्दाय [10](आडम्बराघातम्) आडम्बरवाद्यस्याघातं वादनम् [11](महसे) यज्ञाय [12](वीणावादम्) [13](क्रोशाय) आह्वानाय [14](तूणवध्मम्) वृत्तिविशेषम् [15](अवरस्पराय) अवरो जीवस्तस्मात्पराय श्रेष्ठाय विष्णवे [16](शङ्खध्मम्) वृत्तिविशेषम् [17](वनाय) [18](वनपम्) वनपालकं वृत्तिविशेषम् [19](अन्यतोऽरण्याय) वनभागाय [20](दावपम्) वनवह्निपं वृत्तिविशेषम् — ॥ १९ ॥

ऊँनर्मायेत्यस्य नारायणऋषिर्भुरिगतिजगती छन्दो द्रव्यं दैवतम् १

मंत्रार्थः–(नर्माये)(पुंश्चलूम्)दुष्टांनारीम् ६(हसाये)(कारिम्) करणशीलम् ७(यादसे)(शावल्याम्) शवलः कर्वूरवर्णःनदपत्यभूतांस्त्रियम् ८(ग्रामण्यम्) ग्रामनेतारम् ९(गणकम्) ज्योतिर्विदम् १०(अभिक्रोशकम्) निन्दकम् ११(तान्) त्रीन्(महसे) जुष्टंनियुनक्मीति एकादशेयूपे आलभते॥ एवंमतियूपमेकादश-स्वेकादशसुनियुक्तेषुयेऽधिकाअवशिष्टास्तान् समाप्तिपर्यन्तान्द्वितीयोच्छ्रिते यूपे नियुनक्तितानाह(वीणावादम्)१(पाणिघ्नम्) हस्त ताल वादकम् २(तूणवध्मम्) ३(तान्) त्रीन्(नृत्ताय) आलभते(आन्दादाय)

कुन्तान्महसेवीणावादम्पाणिघ्नन्तूणवध्मन्तान्नृत्तायानन्दाय तलवम्॥२०॥

(तलवम्) वादकम् ।।वागतिगन्धनयोः गन्धनंहिंसातलं हस्तादितलंवाति वाद्यमुखं हन्ति सतलवस्तम् ४–॥२०॥ **अथाध्यात्मम्**–(नर्माय) परिहासाय(पुंश्चलूं थं) व्यभिचारिणीं वुद्धिवृत्तिम्(हसाये) हासाय)कारिम्) प्रश्नोत्तरसम्बान्धिनिक्रियाम्(यादसे) व्रह्मांभुरूपसमुद्रेप्रादुर्भूताय विराट्पुरुषाय(शावल्याम्)(श) शान्तरेववलो यस्यतत्सत्वगुणः शवलूस्तदपत्यभूतांसात्विकीं वुद्धिम्(ग्रामण्यम्) नरसमूहस्यनेतारम्(गणकम्) ज्योतिर्विदम्(अभिक्रोशकम्) अभक्तानांनिन्दकं(तान्) त्रीन् कामान्(महसे) दृष्टदेवोत्स-वाय(वीणावादम्)(पाणिघ्नम्)(तूणवध्मम्)(तान्) कामान्(नृत्ताय) आलभते(आनन्दाय) भक्तानन्दाय

(तलवम्) वाद्यवादकं मनो वृत्ति विशेषम् ॥ २० ॥

ॐ अग्नय इत्यस्य नारायण ऋषि र्भुरिगत्याष्टिश्छन्दो द्रव्यं दैवतम्—

मंत्रार्थः—(अग्नये) (पीवानम्) स्थूलम् ५ (पृथिव्यै) (पीठ सर्पिणम्) पीठेना सनेन सर्पति गच्छति पीठ सर्पीतं पुङ्गम् ६ (वायवे) (चाण्डालम्) चाण्डाल कर्म्माणम् ७ (अन्तरिक्षाय) (वंशनर्तिनम्) वंशेन नर्त्तन शीलम ८ दिवे) (खलतिम्) अलोमाशिरस्कम् खल्वाटम् ९ (सूर्याय) (हर्यक्षम्) हरित नेत्रम् १० (नक्षत्रेभ्यः) (किर्म्मिरम्)

अग्नये पीवानम्पृथिव्यै पीठसर्पिणं वायवे चाण्डालमन्त
रिक्षाय वꣳ शनर्त्तिनं न्दिवे खलतिꣳ सूर्य्याय हर्यक्षन्न
क्षत्रेभ्यः किर्म्मिरञ्चन्द्रमसे किलासमह्ने भुक्लम्पिङ्गाक्षꣳ
रात्र्यै कृष्णम्पिङ्गाक्षम् ॥ २१ ॥

कर्वुरवर्णम् ११ (चन्द्रमसे) (किलासम्) सिध्मरोगवन्तम् १२ (अह्ने) (भुक्लम्) भुक्लवर्णम् (पिङ्गाक्षम्) १३ (रात्र्यै) (कृष्णम्) कृष्ण वर्णम् (पिङ्गाक्षम्) १४—॥ २१ ॥

अथाध्यात्मम्—(अग्नये) जाठराग्नये (पीवानम्) (पीवा) जलं पीपाने (अनः) प्राणः। अप्प्राणसमूहम् (पृथिव्यै) (पीठसर्पिणम्) आसनस्थिति शीलं देहम् (वायवे) (चाण्डालम्) चण्डां तीव्रां गतिमलति स चण्डालः प्राणस्तस्य गतिम् (अन्तरिक्षाय) (वंशनर्त्तिनम्) वंशतुल्य नाडीषु नर्तन शीलं हृदयम् (दिवे)

१२५७ ([10] खलितम्) अलोमाशिरः ([11] सूर्याय) ([12] हर्यक्षमे) हरो सूर्येत दंशत्वेन व्याप्तं जीवात्मानम्। अक्ष व्यासौ ([13] नक्षेत्रे-
भ्यः) ([14] किर्म्मिरम्) चित्रवर्णयुक्तं कमलसमूहम् ([15] चन्द्रमसे) ([16] किलासमे) (क) देहः (डू) कामिनी (ल) पृथि
वी (आस) आसनं यस्य तन्मनः ([17] अह्ने) देवयान मार्गाय ([18] शुक्लम्) सात्विकम् ([19] पिङ्गाक्षम्) पिङ्गं दीपाशिखाव-
र्णी कारणशरीरं तेनाक्षं व्याप्तं जीवात्मानम् ([20] रात्र्यै) पितृयान मार्गाय ([21] कृष्णाम्) तामसम् ([22] पिङ्गाक्षम्) जीवा

अथैतानष्टौ विरूपानालभतेऽतिदीर्घञ्चातिह्रस्वञ्चातिस्थू
लञ्चातिकृशञ्चातिशुक्लञ्चातिकृष्णञ्चातिकुल्वञ्चा

त्मानम् ॥२१॥ ओं अथैतानित्यस्य नारायण ऋषिर्निचृत्कृतिश्छन्दो द्रव्यं दैवतम्-

मंत्रार्थः- ([1] अथ) ([2] एतान्) ([3] अष्टौ) ([4] विरूपान्) परस्परं विरुद्ध रूपान्पशून् ([5] आलभते) तानाह ([6] अति दीर्घम्)
([7] च) ([8] अति ह्रस्वं) ([9] च) ([10] अतिस्थूलम्) ([11] च) ([12] अति कृशम्) ([13] च) ([14] अति शुक्लम्) ([15] च) ([16] अति कृष्णम्) ([17] च) ([18] अ-
तिकुल्वम्) रोमरहितम् ([19] च) ([20] अतिलोमशम्) सर्वाङ्ग व्यापिरोमाणम् ([21] च) ([22] ते) ([23] अशूद्राः) ([24] अब्राह्मणाः) शूद्र
ब्राह्मण व्यतिरिक्ताः पशवो भवन्ति ते ऽष्टावपि ([25] प्राजापत्याः) प्रजापति देवताः अष्टाउत्तमानालभत इत्युपक्रम्य
ते वै प्राजापत्या भवन्तीति १३।६।२।७-८ श्रुतेः अत्र जातिनियमात्पूर्वेषु जातेरनियमः। वीणावादादयश्चतु-

दृश्ञ्रतिदीर्घादयोऽष्टौ एवं द्वाविंशतिः शेषाः। तथा (मागधः)[२६] (पुंश्चली)[२७] (कितवः)[२८] (क्लीवः)[२९] (एते)[३०] चत्वारोऽपि अशूद्राः)[३१] (अब्राह्मणाः)[३२] शूद्रब्राह्मणव्यतिरिक्ताः (ते)[३३] (प्राजापत्याः)[३४] प्रजापतिदेवताः पूर्वैः सहैते षड्विंशतिः ते सर्वे द्वितीययूपे नियोज्याः। सर्वेषां नियोगान्तरं तान्नियुक्तान् पुरुषान् सहस्रशीर्षा पुरुष इति ३१।१—१६ षोडशर्चेनानुवाकेन दक्षिणत उपविष्टो होतृवदभिष्टौति। होतृवदिति प्रथमोत्तमयोस्त्रिश्चिनमऋगन्तानां प्रणवेन सन्धानञ्च यथा सहस्रशीर्षा पुरुषः० ङ्गुलोम् पुरुषएवेदꣳ—० रोहतोम्। एवमभिष्टौति। तत आलम्भन

तिलोमश्च। अशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः। मागधः पुंश्चली कितवः क्लीवोऽशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः २२

क्रमेण यथादैवतं प्रोक्षणादि। ब्राह्मणादीनां पर्यग्निकरणानन्तरमिदं ब्रह्मण इदं क्षत्राय इत्येवं सर्वेषां यथास्वस्वदेवतोद्देशेन त्यागः। ततः सर्वान् ब्राह्मणादीन् यूपेभ्यो विमुच्योत्सृजति। तत अध्वर्युराज्यं संस्कृत्य सकृद्गृहीतमाज्यं गृहीत्वा ओम् पुरुषदेवताभ्यो ब्रह्मादिभ्य आहवनीये जुहोति ओम् ब्रह्मणे स्वाहा १ क्षत्राय स्वाहा २ मरुद्भ्यः ३ तपसे ४ तमसे ५ इत्याद्यध्यायान्तं सर्वदेवताभ्यः चतुरशीत्युत्तरशतसङ्ख्याभ्यः तावतीर्घृताहुतीर्हुत्वा स्विष्टकृतादि उदवसानीयान्तं कर्म कृत्वान्ते यजमानः अयं ते योनिरिति मंत्रेणात्मन्यग्नीन् समारोप्याग्नयः सम्भृत इ

॥ य० ॥ माध्यं० श्रा० ॥ वाज० सं० ॥

॥ अ० ३० ॥ कं० २२ ॥ १२५८ ॥

ति (३१ १७) षड्‌चेनानुवाकेन सूर्यमुपस्थाय पश्चादनवलोकयन्नरण्यं गत्वा सन्न्यसेत् गार्हपत्ये धरारणि-मनुप्रप्रहृत्याहवनीयउत्तरारणिमात्मन्नग्नीसमारोप्यारण्यं व्रजेदिति शाङ्खायनोक्तेः यदि पुरुषमेधानन्तरं ग्रामवासेच्छा तर्ह्युदवसानीयान्तेसायमाहुतीर्हुत्वारण्योरग्नीसमारोप्योत्तरनारायणेनार्कमुपस्थाय देवयजनमादीप्य गृहं व्रजेत् गृहे आगत्य निर्मथ्याग्निं स्थापयेत् यथेच्छं यज्ञानापि कुर्यात्। अयमपि पक्षोऽस्ति तत्पुरुषमेधानन्तरं सन्न्यास एव ॥ २२ ॥

अथाध्यात्मम्

इति माध्यन्दिनीयायां वाजसनेयसंहितायां त्रिंशो ऽध्यायः ॥ ३० ॥

([१] अथ) ([२] एतान्) ([३] अष्टौ) ([४] विरूपान्) परस्परं विरुद्धरूपान् ([५] आलभते) तानाह ([६] अतिदीर्घम्) प्रधानरूपं शरीरम् ([७] च) ([८] अतिह्रस्वम्) विराजोत्पत्तिकारणं कर्मसमूहवीजम् ([९] च) ([१०] अतिस्थूलम्) विराट्‌देहम् ([११] च) ([१२] अतिकृशम्) अतिसूक्ष्मं हिरण्यगर्भशरीरम् ([१३] च) ([१४] अतिशुक्लम्) विष्णोपाधिम् ([१५] च) ([१६] अतिकृष्णम्) रुद्रोपाधिम् ([१७] च) ([१८] अति-कुल्वम्) यतीरूपावताराणां देहोपाधिम् ([१९] च) ([२०] अतिलोमशम्) गृहस्थादिरूपावताराणां देहोपाधिम् ([२१] च) ([२२] ते)

[२३](अम्भूद्राः) अदासाईशरूपत्वात् [२४](अब्राह्मणाः) प्रधानरूपत्वात्ते [२५](प्राजापत्याः) ब्रह्मदेवताः। ब्रह्म वै प्रजापतिः श्रा० १३।६।२।८ [२६](मागधः) (मा) माया (ग) गौरवं मायाया गौरवं धारयतीति तत् समष्टिमनः [२७](पुंश्चली) पुरुषस्य शक्तिभूत्वाऽपि प्रधानकार्ये ब्रह्माण्डे व्याप्ता समष्टिबुद्धिः [२८](कितवः) मायापाशे द्यूतकारकं समष्टिचित्तम् [२९](क्लीवः) ब्रह्मप्राप्तौ पुरुषार्थहीनो देहाभिमानरूपोऽहंकारः [३०](एते) [३१](अम्भूद्राः) अदासाः ईशाङ्गरूपत्वात् [३२](अब्राह्मणाः) प्रधानरूपत्वात् [३३](ते) [३४](प्राजापत्याः) ब्रह्मदेवताः यथा श्रुतिः अष्टाऽउत्तमानालभते अष्टाक्षरा गायत्री ब्रह्म गायत्री तद्ब्रह्मैवैतदस्य सर्वस्योत्तमं करोति तस्माद्ब्रह्मास्य सर्वस्योत्तममित्याहुः ते वै प्राजापत्या भवन्ति ब्रह्म वै प्रजापतिर्ब्रह्मो हि प्रजापतिस्तस्मात्प्राजापत्या भवन्ति १३।६।२।७-८-॥२२॥

इति श्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मकृते यजुर्वेदीयब्रह्मभाष्ये नरमेधपशुवर्णनं नाम त्रिंशोऽध्यायः ३०॥

ॐनारायणंनमस्कृत्यनरञ्चैवनरोत्तमम्। देवींसरस्वतींव्यासंततोजयमुदीरयेत् १ पूर्वाध्याये व्यष्टिपुरुषान् समष्टिपुरुषायसमर्पयित्वाऽद्यतं महापुरुषं स्तौति॥ ॐसहस्रशीर्षेत्यस्यनारायणऋषिर्निचृदार्ष्यनुष्टुप्छन्दः पुरुषोदेवता

मंत्रार्थः– यः (पुरुषः) सर्वलोकेषु व्याप्तोमहानारायणः। यथाश्रुतिः इमेवैलोकाः पूरयमेव पुरुषोयोऽयंपवतेसोऽस्यांपुरिशेतेतस्मात्पुरुषः १३।६।२।१ (सहस्रशीर्षा) सर्वात्मरूपत्वादनन्तानि शीर्षाणि यस्य (सहस्राक्षः) अनन्तान्यक्षीणियस्य (सहस्रपात्) अनन्ताः पादायस्य (सः) (भूमिम्) व्यष्टिसमष्टिदेहरूपं स्थानं (सर्वतः) तिर्यक्ऊर्द्धमधश्च (स्पृत्वा) व्याप्य। स्पृणोतिर्व्याप्तिकर्मा (दशाङ्गुलम्) नाभेः सकाशाद्दशाङ्गुलपरिमितं देशं हृदयम् (अति) अतिक्रम्य (अतिष्ठत्) अन्तर्यामिरूपेणावस्थितः॥१॥ ॐपुरुष इत्यस्यविनियोगः पूर्ववत्–

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिꣳ सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥१॥ पुरुषएवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥२॥ एतावानस्यमहिमा तोज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि॥३॥

मंत्रार्थः–(इदम्) (यत्) (भूतम्) अतीतं ब्रह्मसंकल्पजंजगत् (च) (यत्) (भाव्यम्) भविष्यंब्रह्मसंकल्पजंजगत् (उत) अपिच (यत्) जगत् (अन्नेन) वीजानान्नपरिणामेन वीर्येण वा (अतिरोहति) वृक्षनरपश्वादिरूपं प्राप्नोतितत् (सर्वम्) (अमृतत्वस्य) मोक्षस्य (ईशानः) स्वामी (पुरुषः) महानारायणः (एव) तस्यान्याभावात्॥२॥

ॐ एनावानित्यस्य विनियोगः पूर्ववत्-

मंत्रार्थः-[1](अस्य) महानारायणस्य [2](महिमा) विभूतिः [3](एतावान्) इति न [4](च) चिदात्मा [5](पुरुषः) महानारायणः [6](अतः) संसारात् [7](ज्यायान्) अतिशयेनाधिकः यस्मात् [8](विश्वा) विश्वानि [10](भूतानि) ब्रह्माण्डानि [11](अस्य) महानारायणस्य [12](पादः) चतुर्थांशः [13](दिवि) गोलोके [14](अस्य) [15](त्रिपादस्य) स्वरूपम् [16](अमृतम्) विनाशरहितम् यस्मादनन्तं ब्रह्मैव स्वभागे स्वज्योतिषा महानारायणरूपोऽभवत् ॥ ३॥

त्रिपादूर्द्ध उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः । ततो विश्वङ् व्यक्राम
त्साशनानशने अभि ॥ ४॥ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः
स जातोऽत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५॥

ॐ त्रिपादूर्द्ध इत्यस्य नारायण ऋषिरार्ष्यनुष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता-

मंत्रार्थः-[1](त्रिपात्) [2](पुरुषः) महानारायणः [3](ऊर्द्धः) ब्रह्माण्डादूर्ध्वम् [4](उदैत्) उत्कर्षेणास्थितवान् [5](पुनः) [6](अस्य) महानारायणस्य [7](पादः) चतुर्थांशः [8](इह) संसारे [9](अभवत्) व्याप्तोऽभवत् [10](ततः) मायाप्रवेशानन्तरं [11](विश्वङ्) विषुसर्वत्राञ्चतीति विश्वङ् देवतिर्यगादिरूपेण विविधः सन् [12](साशनानशने) अशनेन सह वर्त्तमानं साशनमशनादिव्यवहारोपेतं चेतनप्राणिजातम् अनशनं तद्रहितमचेतनं गिरिनद्यादिकं [13](अभि) अभिलक्ष्य [14](व्यक्रामत्) व्याप्तवान् यथा भगवद्वाक्यं विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगदिति ॥ ४॥

ॐतत इत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्-

मंत्रार्थः- ([1]ततः) महानारायणात् ([2]विराट्) ब्रह्माण्डदेहः। तथा ([3]विराजः) तद्देहाभिमानी ([4]पूरुषः) ([5]अधि) तमेव
देह माधिकरणं कृत्वा ([6]अजायत) ([7]सः) ([8]जातः) विराट् पुरुषः ([9]अत्यरिच्यत) अतिरिक्तो देवतेशोभूत ([10]पश्चात्) ([11]भूमिम्)
ससर्ज ([12]अथ) तदनन्तरम् ([13]उ) एव ([14]पुरः) देवमनुष्यादीनां शरीराणि ससर्ज ॥५॥

ॐतस्मादित्यस्य नारायणऋषिरार्चीपंक्तिश्छन्दः पुरुषोदेवता- **मंत्रार्थः**- ([1]तस्मात्) ([2]यज्ञात्) महानारायणा-

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या
नारण्याग्राम्याश्च ये॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि ज-
ज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥७॥

त् ([3]सर्वहुत) सर्वं हूयते यस्मिन् तत् ([4]पृषदाज्यम्) दधिमिश्रमाज्यं प्राणं वा। प्राणोहि पृषदाज्यमन्नं हि प्राणः श०
३।८।४।८। ([5]सम्भृतं) सम्पादितम् तथा स महानारायणः ([6]तान्) ([7]वायव्यान्) वायुः प्राणो वा देवता येषां तान् ([8]पशू
न्) ([9]चक्रे) ([10]ये) ([11]आरण्याः) अरण्येभवाः हरिणादयः यद्वा आरण्यकाण्डसम्बन्धीन्द्रियाणि ([12]च) ([13]ग्राम्याः) ग्राम
भवा अश्वादयः यद्वा ग्रामवृत्तमार्गसम्बन्धीन्द्रियाणि॥६॥ ॐतस्मादित्यस्य नारायणऋषिरार्ष्यनुष्टुप् छन्दो पुरुषो-
देवता- **मंत्रार्थः**- ([1]तस्मात्) ([2]सर्वहुतः) सर्वैर्हूयते तस्मात् ([3]यज्ञात्) यज्ञपुरुषात् महानारायणात् ([4]ऋचः) ([5]सा
मानि) ([6]जज्ञिरे) उत्पन्नानि ([7]तस्मात्) महानारायणात् ([8]छन्दांसि) ([9]जज्ञिरे) ([10]तस्मात्) महानारायणात् ([11]यजुः) ([12]अजायत)

॥७॥ ॐ तस्मादश्वा इत्यस्य नारायण ऋषिर्निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दो पुरुषो देवता–

मंत्रार्थः–(तस्मात्) महानारायणात् (अश्वाः) (च) (ये) (के) अश्वातिरिक्ता गर्दभादयो भूतानि (उभयादतः) ऊर्ध्वाधोभागयोर्दन्तयुक्ताः सन्ति तेऽपि। छान्दसं दीर्घम् (अजायन्त) (ह) स्फुटं (तस्मात्) महानारायणात् (गावः) (जज्ञिरे) (तस्मात्) महानारायणात् (अजावयः) अजाः अवयश्च (जाताः) ॥८॥

ॐ तं यज्ञमित्यस्य विनियोगः पूर्ववत्– **मंत्रार्थः**–(ये) (साध्याः) (देवाः) (च) (ऋषयः) सनकादयस्ते (अग्रतः) सृष्टेः पूर्वं (जातम्) उत्पन्नम् (तम्) (यज्ञम्) यज्ञसाधनभूतम् (पुरुषम्) विराट्पुरुषम् (बर्हिषि) आत्मलोके। अ

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥८॥ तं यज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥९॥

यं वै लोको बर्हिः श० १।४।१।२४ (प्रौक्षन्) प्रोक्षितवन्तः प्रोक्षणादिभिः संस्कारैः संस्कृतवन्तः (तेन) विराट्पुरुषरूपेण पशुना (अयजन्त) मानसयागं निष्पादितवन्तः ॥९॥ ॐ यत्पुरुषमित्यस्य विनियोगः पूर्ववत्–

मंत्रार्थः–प्रश्नः (यत्) यदा (पुरुषम्) विराट्पुरुषम् (व्यदधुः) महानारायणेन प्रेरिता महदहङ्कारादय उत्पादयन्तदा (कतिधा) कतिभिः प्रकारैः (व्यकल्पयन्) विविधं कल्पितवन्तः (अस्य) विराट्पुरुषस्य (मुखम्) (किम्) (आसीत्) (किम्) (बाहू) (ऊरू) चास्ताम् (किम्) (पादौ) (उच्येते) ॥ १०॥

१२६५ ओंब्राह्मणोऽस्येत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्- **मंत्रार्थः**- पूर्वोक्तप्रश्नोत्तरमाह ([1]ब्राह्मणः)([2]अस्य) विराट्पुरुषस्य ([3]मुखम्)([4]आसीत्) मुखादुत्पन्ना ([5]राजन्यः) क्षत्रियः ([6]बाहू कृतः) बाहुत्वेन निष्पादितः ([7]अस्य)([8]यत्) यौ ([9]ऊरू)([10]तत्) तद्रूपः ([11]वैश्यः)([12]पद्भ्याम्)([13]शूद्रः)([14]अजायत) उत्पन्नः ॥ ११॥ ओंचन्द्रमेत्यस्य नारायण ऋषिरार्ष्यनुष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता [1] **मंत्रार्थः**-(मनसः) विराट्पुरुषस्य मनःशक्तेः([2]चन्द्रमा)([3]जातः)([4]चक्षोः) चक्षुषः सकाशात्([5]सूर्यः)([6]अजायत)([7]श्रोत्रात्) कर्णात्([8]वायुः)([9]च)([10]प्राणः) अजायत([11]च)([12]मुखात्)([13]अग्निः)([14]अजायत) ॥ १२॥

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ १०॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ ११॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥ १२॥

ओंनाभ्या इत्यस्य विनियोगः पूर्ववत्- **मंत्रार्थः**-([1]नाभ्याः) नाभेः सकाशात्([2]अन्तरिक्षम्)([3]आसीत्)([4]शीर्ष्णः) शिरसः([5]द्यौः) स्वर्गः([6]समवर्तत) उत्पन्ना([7]पद्भ्याम्)([8]भूमिः) उत्पन्ना([9]श्रोत्रात्)([10]दिशः) उत्पन्नाः([11]तथा) तेनोक्तविधिना-([12]लोकान्) भूरादीन्([13]अकल्पयन्) विराट्पुरुषस्य देहात् ॥ १३॥ ओंयत्पुरुषेणेत्यस्य नारायण ऋषिर्निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दो यज्ञो देवता- **मंत्रार्थः**-([1]यत्) यदा([2]देवाः) विद्वांसः। विद्वांसो हि देवाः श० ३।७।३।१० ([3]पुरुषेण) विराट्देहरूपेण([4]हविषा) अन्नं वै विराट् श० १२।२।४।५ ([5]यज्ञम्) ज्ञानयज्ञम्([6]अतन्वत) तदा([7]अस्य) ज्ञानयज्ञस्य

(वसन्तः) ऋतुः (आज्यम्) (आसीत्) (ग्रीष्मः) (इध्मः) तथा (शरत्) (हविः) (आसीत्) ॥ १४ ॥

ओं सप्तास्येत्यस्य नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दो यज्ञो देवता—

मंत्रार्थः—(यत्) यदा (यज्ञम्) ज्ञानयज्ञम् (तन्वानाः) कुर्वाणाः (देवाः) विद्वांसः (पुरुषम्) विराट् पुरुषरूपम् (पशुम्) (अबध्नन्) भावितवन्तस्तदा (अस्य) ज्ञानयज्ञस्य (सप्त) गायत्र्यादीनि छन्दांसि क्षीरादयः समुद्रा वा (परिधयः) (आसन्) (त्रिः सप्त) द्वादश मासाः पञ्चर्त्तवस्त्रय इमे लोका असावादित्य एते एकविंशतिः यद्वा गायत्र्या-

नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रा त्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥ सप्तास्यासन्परिधय स्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमा

दीनि सप्त अतिजगत्यादीनि सप्त कृत्यादीनि सप्त छन्दांसि (समिधः) (कृताः) ॥ १५ ॥

ओं यज्ञेनेत्यस्य नारायण ऋषिर्भुरिगुष्णिक् छन्दो यज्ञो देवता— मंत्रार्थः—(देवाः) विद्वांसः (यज्ञेन) विराड्रूप-हविः सम्बन्धिज्ञानयज्ञेन (यज्ञम्) यज्ञपुरुषं महानारायणम् (अयजन्त) पूजितवन्तः (तानि) महानारायण-पूजनसम्बन्धीनि (धर्म्माणि) (प्रथमानि) मुख्यानि (आसन्) (यत्र) महानारायणलोके (पूर्वे) (साध्याः) (सन्ति) ति-

श्नुवन्ति तम् (नाकम्) दुःखरहितं लोकम् (ह) एव (ते) (महिमानः) महानारायणस्य भक्ता महात्मानः (सचन्त) आसक्ताः
॥१६॥ इति पुरुषसूक्तानुवाकः ॐ अद्भ्य इत्यस्य नारायण ऋषिः भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छन्दः आदित्यो देवता–
मंत्रार्थः– उत्तरनारायणोपासना यजमानस्य सायुज्यं वर्णयति (पृथिव्यै) पृथिव्याः (देहस्य) (रसात्) इन्द्रियस
मूहात् (च) (अद्भ्यः) कमलान्तरिक्षेभ्यः आप इति अन्तरिक्षनामनिघं० (सम्भृतः) संहृतो अंगुष्ठमात्रजीवः (विश्वे
कर्म्मणः) महानारायणस्य (अग्रे) समीपे (समवर्त्तत) (त्वष्टा) महानारायणः (तस्य) जीवात्मनः (रूपम्) स्वलो

नस्सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै
रसाच्च विश्वकर्म्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्य
स्य देवत्वमाजानमग्रे ॥१७॥ वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्त
मसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥१८॥

कोऽन्वितम् (विदधत्) ददत्पुनस्तम् (एति) प्राप्नोति (अग्रे) श्रेष्ठकाले कृतयुगे (मर्त्यस्य) मनुष्यस्यानन्यभ
क्तस्य (तत्) (आजानम्) मुख्यम् (देवत्वम्) ॥१७॥ ॐ वेदाहमित्यस्य नारायण ऋषिर्निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः
पुरुषो देवता **मंत्रार्थः**– मंत्रः कथयति (अहम्) (एतम्) (आदित्यवर्णम्) आदित्यस्येव वर्णो यस्य तम्
(तमसः) (परस्तात्) अविद्याया शून्यं ज्ञानस्वरूपम् (महान्तम्) (पुरुषम्) महानारायणम् (वेद) जानामि (तम्)
(एव) महानारायणमेव (विदित्वा) ज्ञात्वा (मृत्युम्) (अति) अतिक्रम्य (एति) प्राप्नोति (अयनाय) साम्भया

य (अन्यः) (पन्था) मार्गः (न) (विद्यते) ॥ १८ ॥ ओंप्रजापतिरित्यस्यनारायणऋषिर्भुरिगार्षीत्रिष्टुप्छन्दः पुरुषो देवता १ मंत्रार्थः- (प्रजापतिः) ब्रह्मा (गर्भे) (अन्तः) गर्भमध्ये (चरति) प्राप्तो भवति (जायमानः) सन् (बहुधा) देवतिर्यङ्मनुष्यादिरूपेण (विजायते) उत्पद्यते (धीराः) ब्रह्मविदः (तस्य) ब्रह्मणः (योनिम्) महानारायणम् (परिपश्यन्ति) (यस्मिन्) (ह) यस्मिन्नेव (विश्वा) विश्वानिसर्वाणि (भुवनानि) ब्रह्माण्डाणि (तस्थुः) स्थितानि ॥ १९ ॥ ओंयोदेवेभ्य इत्यस्यनारायणऋषिरार्ष्युष्णिक् छन्दः पुरुषो देवता-

प्रजापतिश्चरतिगर्भेऽअन्तरजायमानो बहुधाविजायते। तस्ययोनिम्परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्हतस्थुर्भुवनानिविश्वा ॥ १९ ॥ योदेवेभ्यऽआत पतियोदेवानाम्पुरोहितः पूर्व्वोयोदेवेभ्योजातोनमोरुचाय ब्राह्मये ॥ २० रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तोदेवाऽअग्रेतदब्रुवन्। यस्त्वैवम्ब्राह्मणोविद्यात्तस्यदेवा ऽअसन्वशे ॥ २१ ॥

मंत्रार्थः- (यः) महानारायणः (देवेभ्यः) सूर्यचन्द्रादिभ्यः (आतपति) स्वप्रकाशंददाति (यः) (देवानाम्) ब्रह्मविष्णुमहेशानाम् (पुरोहितः) अग्रेहितकरः पूज्यश्च (यः) (देवेभ्यः) ब्रह्मविष्णुमहेशेभ्यः (पूर्वः) (जातः) प्रादुर्भूतस्तस्मै (ब्राह्मये) (रुचाय) ब्रह्मसम्बन्धिज्योतिषे (नमः) ॥ २० ॥ ओंरुचमित्यस्यनारायणऋषिरार्ष्यनुष्टुप् छन्दः पुरुषोदेवता- मंत्रार्थः- (अग्रे) कृतयुगे (तत्) (ब्राह्मम्) (रुचम्) ब्राह्मज्योतिः स्वरूपंमहानारायणम् (जनयन्तः)

ज्ञानगोचरं कृतवन्तः (देवाः) विद्वांसः (अब्रुवन्) (यः) (ब्राह्मणः) ब्रह्मज्ञानी (त्वा) त्वाम् (एवम्) पूर्वोक्तप्रशंसायुक्तम् (विद्यात्) जानीयात् (देवाः) सर्वे देवाः (तस्य) ब्रह्मनिष्ठस्य (वशे) (असन्) भवन्ति महानारायणोपासको जगत्पूज्यो भवति २१

ॐ श्रीश्चत इत्यस्य नारायण ऋषिर्निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता १

मंत्रार्थः– हे महानारायण (श्रीः) (च) (लक्ष्मीः) (ते) (पत्न्यौ) जायास्थानीये (च) (अहोरात्रे) ब्रह्मणो ऽहोरात्रे तव (पार्श्वे) पार्श्वस्थानीये (नक्षत्राणि) क्षतात्संसाररोगान्न रक्षन्ति तानि देवमनुषादि शरीराणि (रूपम्) (अश्विनौ)

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्
इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण २२

इति माध्यन्दिनीयायां वाजसनेयसंहितायामेकत्रिंशोऽध्यायः ३१

नरनारायणौ तव (व्यात्तम्) विकासितं मुखम् (इष्णन्) स्वयमिच्छन् सन् इष इच्छायाम् (इषाण) स्वात्मानं प्रापय इष गतौ (अमुम्) स्वर्लोकम् (मे) (इषाण) प्रापय (सर्वम्) योगैश्वर्यम् (मे) (इषाण) प्रापयेति प्रार्थना २२

इति श्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मकृते यजुर्वेदीयब्रह्मभाष्ये महानारायणार्चनं नामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥३१॥ ॐ नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् १

अथ सर्वमेधमंत्रा उच्यन्ते ॥ ॐ तदेवाग्निरित्यस्य स्वयम्भुर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता–

यथा श्रुतिः ब्रह्म वै स्वयम्भु तपोऽतप्यत तदैक्षत न वै तपस्यानन्त्यमस्ति हन्ताहं भूतेष्वात्मानं जुहवानि भूता

निचात्मनीतिब्रह्सर्वेषु भूतेष्वात्मान थं हुत्वाभूतानिचात्मनि सर्वेषांभूताना ७ं श्रैष्ठ्य ७ं स्वाराज्यमाधिपत्यंपर्यै-
त्तथैवैतद्यजमानः सर्वमेधे सर्वान्मेधान्हुत्वासर्वाणि भूतानि श्रैष्ठ्य ७ं स्वाराज्यमाधिपत्यंपर्येति सवाऽएषसर्वमेधो
दशरात्रो यज्ञक्रतुर्भवति दशाक्षरा विराड्विराडु कृत्स्नमन्नं कृत्स्नस्यैवान्नाद्यस्यावरुद्ध्यै तस्मिन्नाग्निं परार्ध्यंचि
नोति परमोवाऽएष यज्ञक्रतूनां यत्सर्वमेधः परमेणैवैनं परमतां गमयति श० १३।७।१।१-२-

मंत्रार्थः–(अग्निः)(तत्)ब्रह्म(एव)(आदित्यः) सूर्यः (तत्) ब्रह्मैव (वायुः) (तत्) ब्रह्मैव (चन्द्रमाः) (तत्) (उ) वह्मै-

तदे॒वाग्निस्तदा॑दि॒त्यस्तद्वा॒युस्तदु॑च॒न्द्रमाः। तदेव शु॒क्रन्तद्ब्र॒ह्मतआ
पः॒स प्र॒जापतिः॥ १॥ सर्वे॑निमे॒षाजज्ञिरे वि॒द्युतः॒ पुरु॑षा॒दधि। नैन मूर्द्धन्न
ति॒र्य्यञ्चन्नमध्ये परिजग्रभत्॥ २॥ नतस्य॑प्रति॒मा॑ऽअस्ति॒ यस्य॒नाम॑म॒ह
द्यशः। हि॒र॒ण्य॒गर्भइत्येषः मामाहि थं सी॒दित्येषायस्मा॒न्नजात इत्येषः ३

व (शुक्रम्) संसारवीजम् (तत्) (एव) ब्रह्मैव (ताः) प्रसिद्धाः (आपः) (स) (प्रजापतिः) ईश्वरः (तत्) (ब्रह्म) सर्व
खल्विदंब्रह्म नेहनानास्ति किंचनेत्यर्थः॥ १॥ ओंसर्वेनिमेषाइत्यस्याविनियोगः पूर्ववत्
मंत्रार्थः–(विद्युतः) विशेषेण द्योतते विद्युत् तस्मात् (पुरुषात्) महानारायणात् (सर्वे) (निमेषाः) कालाः (अ
धिजज्ञिरे) कश्चिदपि (एनम्) महानारायणम् (ऊर्द्धम्) उपरिभागे (न) (परिजग्रभत्) परिगृह्णाति (न) (तिर्य-
ञ्चम्) चतुर्दिक्षु (न) (मध्ये) मध्यदेशे गृह्णाति यस्मान्न ह्यसौ प्रत्यक्षादीनां विषयः॥ २॥

॥ य० ॥ माध्यं० शा० ॥ वाज० सं० ॥

॥ अ० ३२ ॥ कं० ॥ ३ ॥ १२७० ॥

ऊँ नतस्येत्यस्य स्वयम्भुर्ऋषिर्द्विपदा गायत्री छन्दः पुरुषो देवता- **मंत्रार्थः**-(तस्य) महानारायणस्य (प्रतिमा) प्रतिमानमुपमानं किंचिद्वस्तु (न) (अस्ति) (यस्य) महानारायणस्य (नाम) (महद्यशः) शेषाः संकेतिता मंत्रा व्याख्याताः हिरण्यगर्भ इत्येषोनुवाकश्चतुर्ऋचः (२५, १०-१३) मामाहिंसीदित्येषा (१२, १-२) यस्मान्नजात इत्येषः (८, ३६-३७) एता ब्रह्मयज्ञे जपे च सर्वाश्च ध्येयाः-३॥

ऊँ एषो हेत्यस्य स्वयम्भुर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता- **मंत्रार्थः**-(एषः) (ह) एव (देवः) महानारायणः

एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः। स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः॥ ४॥ यस्माज्जातं न पुरा किंचनैव य आबभूव भुवनानि विश्वा। प्रजापतिः प्रजया संरराणस्त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी ५

(सर्वाः) (प्रदिशः) (अनुतिष्ठति) व्याप्यास्थितः (जनाः) हे भक्तजनाः (ह) प्रसिद्धमेष (पूर्वः) (जातः) सर्वेषां पूर्वमेव प्रादुर्भूतः ब्रह्मभावान्महानारायणरूपं प्राप्तः (गर्भे) ब्रह्माण्डगर्भे (अन्तः) मध्ये (सः) (उ) एव (जातः) (जनिष्यमाणः) उत्पत्स्यमानः (सः) (एव) (प्रत्यङ्) प्रति पदार्थमञ्चति प्रत्यङ् (सर्वतोमुखः) (सः) स एव॥ ४॥

ऊँ यस्मादित्यस्य विनियोगः पूर्ववत्- **मंत्रार्थः**-(यस्मात्) महानारायणात् (पुरा) (किंचन) किमपि चैतन्यमन्यत् (न) (जातम्) (यः) महानारायणः (एव) (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (भुवनानि) ब्रह्माण्डानि भूतजा

तानिवा (आवभूव) अन्तर्भूतोऽएयर्थः (सः) (षोडशी) षोडशकलासम्पन्नः (प्रजापतिः) प्रजानां पालको महानारायणः (प्रजया) नानादेहरूपया (संरराणः) आत्मरूपेण क्रीडमानः (त्रीणि) (ज्योतींषि) रवीन्द्वग्निरूपाणि (सचते) सेवते तेषां रूपेण प्रादुर्भवति॥५॥ ओंयेनेत्यस्य विनियोगः पूर्ववत् **मंत्रार्थः**–(येन) महानारायणेन (द्यौः) (उग्रा) उद्गूर्णा वृष्टिकरणेऽउद्यता (च) (पृथिवी) (दृढा) सर्वप्राणिधारणं व्यष्टिग्रहणमन्ननिष्पादनञ्चेति भूमेर्दार्ढ्यम् (येन) महानारायणेन (स्वः) स्वर्गः (स्तभितम्) स्तम्भितम् (येन) महानारायणेन (नाकः) दुःखरहितो गोलोको भक्तानां दृष्टिगोचरः (यः) महानारायणः (अन्तरिक्षे) नभसि (रजसः) जलस्य (विमानः) निर्म्माता तस्मै (कस्मै) महा-

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥६॥ यं क्रन्दसीऽअवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने। यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम। आपो ह यद्बृहतीर्य्य

नारायणाय (हविषा) हविः (आविधेम) दद्मः॥६॥ ओंयमित्यस्य विनियोगः पूर्ववत्–

मंत्रार्थः–(अवसा) हविर्लक्षणेनान्नेन वृष्टिजनकेन (तस्तभाने) प्राणिजातं स्तम्भयन्त्यौ। व्यत्ययेन स्तम्भेर्ह्रीदित्वम् (रेजमाने) शोभमाने (क्रन्दसी) द्यावापृथिव्यौ (मनसा) (यम्) महानारायणम् (अभ्यैक्षेताम्) साधु कृत मित्यपश्यताम् (यत्र) द्यावापृथिव्योः (सूरः) सूर्यः (उदितः) सन् (अधिविभाति) अधिकं शोभते विभावयति वा तस्मै (कस्मै) (देवाय) महानारायणाय (हविषा) हविः (आविधेम) दद्मः द्वे प्रतीकोक्ते जपादावध्येये व्याख्याते (२७, २५-२६)॥७॥

अथाध्यात्मम्· (अवसा) इन्द्रियशक्तीरूपान्नेन (तस्तभाने) आत्मप्रतिविंवंस्तम्भयन्त्यौ (रेजमाने) दीप्यमाने (क्रन्दसी) हृदयभृकुट्यौ (मनसा) सह (यम्) महानारायणम् (अभ्यैक्षेताम्) समन्तादपश्यताम् (यत्र) महानारायणे (सूरः) मानससूर्यः (उदितः) सन् (आधिविभाति) शोभते तस्मै (कस्मै) (देवाय) महानारायणाय (हविषा) आत्मप्रतिविंवम् (आविधेम) दद्मः ॥७॥ ओंवेनइत्यस्य स्वयम्भुर्ऋषिर्निचृदार्षीत्रिष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता-

मंत्रार्थः-(वेनः) पण्डितोविदितवेदान्तरहस्यः (तत्) (गुहानिहितम्) बुद्धौहृदयेवास्थितम् (सत्) नित्यम्ब्रह्म (पश्यत्) पश्यतिजानाति (यत्र) ब्रह्मणि (विश्वम्) कार्य्यजातम् (एकनीडम्) एकस्यैवमहानारायणस्य वास-

श्विदापः ॥७॥ वेनस्तत्पश्यन्निहितङ्गुहासद्यत्र विश्वम्भवत्येकनीडम्। तस्मिन्निदꣳ संचविचैतिसर्वꣳ सओतः प्रोतश्चविभूः प्रजासु ॥८॥ प्रतद्वोचेदमृतन्नुविद्वान्गन्धर्वोधामविभृतङ्गुहासत्। त्रीणिपदानिनिहितागुहास्ययस्तानिवेदस

स्थानम् (भवति) (च) (तस्मिन्) ब्रह्मणि (इदम्) (सर्वम्) भूतजातम् (समेति) संहारकालेसङ्गच्छते (च) (वि) व्येति-सर्गकालेनिर्गच्छति (च) (सः) (विभूः) महानारायणः (प्रजासु) (ओतः) (प्रोतः) व्याप्तः ॥८॥

ओंप्रतद्वोचेदित्यस्य स्वयम्भुर्ऋषिर्भुरिगार्षीत्रिष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता- **मंत्रार्थः**-(गन्धर्वः) वेदवाचांधारकः (विद्वान्) पंडितः (नु) क्षिप्रम् (अस्य) महानारायणस्य (तत्) (अमृतम्) शाश्वतम् (गुहासत्) बुद्धौहृदयेवाविद्यमानम् (धाम) तेजःस्वरूपम् (विभृतम्) विहतंनानारूपैर्विराट्ब्रह्माविष्णुशिवादिभिर्विभक्तमेकंपदम् (प्रवोचेत्) प्रब्रूयात्

(त्रीणि) (पदानि) (गुहानिहिता) गुहानिहितानि महानारायणलोके स्थितानि (यः) (तानि) (वेद) जानाति (सः) (पितुः) ब्रह्मणोऽपि (पिता) विष्णुभावसम्पन्नः (असत्) भवति यथा भगवद्वाक्यं। बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभ इति॥९॥ ओं सनवन्धुरित्यस्य विनियोगः पूर्ववत्-१

मंत्रार्थः (सः) महानारायणः (नः) अस्माकं (वन्धुः) (जनिता) पिता (सः) (विधाता) धारयिता (सः) (विश्वा) (विश्वानि) सर्वाणि (भुवनानि) भूतजातानि (धामानि) स्थानानि (वेद) सर्वात्मकत्वात् (देवाः) (यत्र) महानारायणे (अमृतम्) मो

पितुः पितासत्॥९॥ सनोवन्धुर्ज्जनितासविधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवाअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त॥१०॥ परीत्य भूतानि परीत्य लोकान्परीत्य सर्व्वाः प्रदिशो दिशश्च। उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभिसंविवेश॥११॥

क्षप्रापकं ज्ञानम् (आनशानः) व्याप्नुवानाः प्राप्ताः सन्तः। अश्नुवते आनशानाः वहुलं छन्दसीति अशेर्ह्लादित्वेन द्विः त्वे शानच् विभ्यासस्य नुगागमः (तृतीये) (धामन्) धामनि स्थाने स्वर्गे (अध्यैरयन्त) स्वेच्छया वर्त्तन्ते मोदन्ते॥१०॥ ओं परीत्येत्यस्य स्वयुम्भुर्ऋषिः र्निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दोऽनन्यभक्तो देवता-१

मन्त्रार्थः- अनन्यभक्तस्य ज्ञाननिष्ठस्य मुक्तिं वर्णयति (भूतानि) सर्वभूतानि (परीत्य) ब्रह्मत्वेन विज्ञाय (लोकान्) भूरादीन् (परीत्य) ब्रह्मरूपान् ज्ञात्वा (सर्वाः) (प्रदिशः) (च) (दिशः) (परीत्य) तद्रूपान् ज्ञात्वा (प्रथमजाम्) प्रथमोत्पन्नां

२२७५ त्रयीरूपांवाचम् (उपस्थाय) संसेव्य यज्ञमुपासनाञ्च कृत्वा (आत्मनो) जीवात्मना (ऋतस्य) सत्यस्य ब्रह्मणः (आ
त्मानम्) स्वरूपं महानारायणम् (अभिसंविवेश) प्रविशति तस्य सायुज्यं प्राप्नोति॥ ११॥

ओं परीत्यस्य स्वयम्भुर्ऋषि सर्षी त्रिष्टुप् छन्दः कैवल्य मोक्षार्हो देवता १ **मंत्रार्थः** — (द्यावापृथिवी) (सद्यः) (परीत्य) तद्रूपेण ज्ञात्वा (लोकान्) (परि) परीत्य ब्रह्मरूपान् ज्ञात्वा (दिशः) (परि) परीत्य तद्रूपान् ज्ञात्वा (स्वः) सूर्यम् (परि) परीत्य ब्रह्मरूपं ज्ञात्वा (ऋतस्य) यज्ञस्य (तन्तुम्) कर्त्तव्यताम् (विततम्) प्रसारितं यथा तथा (विचृत्य)

परिद्यावापृथिवीसद्यइत्वापरिलोकान्परिदिशः परिस्वः ऋतस्यतन्तुंविततं विचृत्यतदपश्यत्तदभवत्तदासीत्॥ १२॥ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्यकाम्यम्। सनिम्मेधामयासिषं स्वाहा॥ १३॥ याम्मेधान्देवगणाः पितरश्चोपासते। तयामामद्यमेधयाग्नेमेधाविनङ्कुरुस्वाहा॥ १४॥

समाप्य भक्तियज्ञं ज्ञानयज्ञञ्च कृत्वा (तत्) ब्रह्म (अपश्यत्) (तत्) ब्रह्म (अभवत्) (तत्) ब्रह्म (आसीत्) वस्तुगत्या तदेवास्ति। अज्ञाननिवृत्तिरेव दर्शनं भवनंचेति भावः। तदेवसन्तस्तदुतद्भवामेति श्रुतेः ब्रह्मैव सन् ब्रह्माप्येतीति श्रुतेश्च ब्रह्मरूपस्य जीवस्याज्ञाननिवृत्तिरेव ब्रह्मप्राप्तिरित्यर्थः॥ १२॥ ओं सदसस्पतिरित्यस्य स्वयम्भुर्ऋषिर्भुरिगार्षी गायत्री छंदः प्रार्थना देवता १ **मंत्रार्थः** — इत उत्तरमृक्त्रये मेधा याच्यते चतुर्थ्यामग्नीर्याच्यते (सदसः) यज्ञगृहस्य (पतिम्) पालकम् (अद्भुतम्) अचिन्त्यशक्तिम् (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (प्रियम्) (काम्यम्) मेधार्थिभिः कामनीयमग्निमात्मानं वा

(सनिम्) धनस्ययोगैश्वर्यस्यवादानम् (मेधाम्) धारणावतीं बुद्धिम् (अयासिष थ्ठं) याचेद्धिकर्म्मकः (स्वाहा) नस्मैसुः

कृतमस्तु॥ १३॥ ओंयामित्यस्यस्वयम्भुर्ब्रर्षिर्निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता १

मंत्रार्थः- हे (अग्ने) अग्नेआत्माग्नेवा (अद्य) (तया) (मेधया) (माम्) (मेधाविनम्) (कुरु) (याम्) (मेधाम्) (देव गणाः) (च) (पितरः) (उपासते) (स्वाहा) तुभ्यंसुकृतमस्तु॥ १४॥ ओंमेधाम्मइत्यस्यस्वयम्भुर्ब्रर्षिर्निचृदार्षीबृहती छन्दः प्रार्थनादेवता १ **मंत्रार्थः**-(वरुणः) (मे) मह्यं (मेधाम्) (ददातु) (अग्निः) (प्रजापतिः) च (मेधाम्) ददातु (च)

मेधाम्मेवरुणोददातुमेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्श्ववायुश्श्वमेधान्धातादददातुमेस्वाहा॥ १५॥ इदम्मेब्रह्मचक्षत्रञ्चोभेश्रियमश्नुताम्। मयिदेवादधतुश्रियमुत्तमान्तस्यैतेस्वाहा॥ १६॥

इतिमाध्यन्दिनीयायांवाजसनेयसंहितायांद्वात्रिंशोऽध्यायः॥ ३२॥

(इन्द्रः) (च) (वायुः) (मेधाम्) ददातु (धाता) (मे) (मेधाम्) (ददातु) (स्वाहा) सुकृतमस्तु॥ १५॥

ओंइदम्मइत्यस्यस्वयम्भुर्ब्रर्षिरार्ष्यनुष्टुप् छन्दः प्रार्थनादेवता १ **मंत्रार्थः**-(इदम्) (मे) मम (ब्रह्म) ब्राह्मणजातिर्मनोवा (च) (क्षत्रम्) क्षत्रियजातिः प्राणोवा। मनो वै ब्रह्मप्राणोवै क्षत्रमिति श्रुतेः (उभे) (श्रियम्) लक्ष्मीं योगलक्ष्मीम्वा (अश्नुताम्) (च) (देवाः) (मयि) (उत्तमाम्) (श्रियम्) (दधतु) स्थापयन्तु (तस्यै) (ते) तुभ्यंश्रियै (स्वाहा) सुकृतमस्तु १०

इतिश्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मकृतेयजुर्वेदीयब्रह्मभाष्येसार्वभौधिकमंत्रोक्तिर्नामद्वात्रिंशोऽध्यायः॥३२॥

॥ य० ॥ माध्य० श्रा० ॥ वाज० सं० ॥

॥ अ० ३२ ॥ कं० १६ ॥ १२७६ ॥

१२७१ ॐ नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् १ सर्वमेधेऽग्निष्टोमसंस्थेऽग्निष्टुत्सं ज्ञे प्रथमेऽहनि अस्याजरास इत्याद्या महो अग्ने इत्यन्ताः सप्तदश ऋचोऽग्निदेवत्याः पुरोरुचो भवन्ति। पुरोरुक् शब्देन ग्रहग्रहण मंत्रा उच्यन्ते न यजूरूपाः ऋग्घि पुरोरुगिति श्रुतेः उक्थ्य महावैश्वदेवपात्नीवत हारियो जनेषु यजूरूपे ग्रहण मंत्रे सत्यपि तं वाऽअपुरोरुकं गृह्णातीति श्रुतेस्तत्र न दोषः अत एवाग्नेयीभिर्ऋग्भिरेव निवर्त्यन्ते नोपयामादीनि॥ आवायवीत्यस्याः (७,७) स्थाने-

ॐ अस्याजरास इत्यस्य वत्सप्रीऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता-१

अस्याजरासो दमामरित्रा अर्चद्धूमासो अग्नयः पावकाः। श्वितीचयः श्वात्रासो भुरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः १

मंत्रार्थः-(अस्य) महानारायणस्य (अग्नयः) ब्रह्म. विष्णु महेश देवादिस्वरूपाः (अजरासः) जरारहिताः (दमाम्) लोकानाम् (अरित्राः) अरिभ्योऽसुरैरक्षकाः तथा (अर्चद्धूमासः) (अर्चन्) अर्चनीयो देवयान मार्गः (धूमः) पितृयान मार्गस्ताव ऋद्धू मौतत्सम्बाधिनः (पावकाः) शोधकाः (श्वितीचयः) (श) सुखं (व) कल्याणं (इ) तुष्टिः (त) शक्तिः (ई) पुष्टिस्ताश्चिन्वन्ति भक्तस्य वर्धयन्तिते। चिनोतेः क्विप् अनित्य मागम शासनमिति तुगभावः (श्वात्रासः) (श) शिवः (व) विष्णुः (आ) विनायकः (त) शक्तिः (र) सूर्यः पञ्चदेवस्वरूपाः तथा (भुरण्यवः) (भ) महत् (उ) अहङ्कारः (र) अग्निः (ण) जलं (ण) आकाशः (य) वायुः (उ) भूमिस्तद्गुरण्युस्तत्सम्बन्धिनः (वनर्षदः) (व)

त्वक् (अ) चक्षुः (न) घ्राणं (अ) श्रोत्रं (र) वाक्तनासुसीदन्निते तथा (वायवः) प्राण रूपाः (नः) च (सोमाः) आत्म प्रति-
विंव रूपाः सोमोवैभ्राट् श० —— ॥ १ ॥ ॐ हरयइत्यस्य विश्वरूप ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता—इन्द्रवायूइत्यस्या (७,८)

मंत्रार्थः—(हरयः) (ह) चित्तम् (अ) अहङ्कारः (र) बुद्धिः (इ) मनस्तद्रूपाः तथा (वातजूताः) वातेन जूतं गमनं प्रसारो ये
षां ते (धूमकेतवः) धूम एव केतुरूपि कोयेषां ते (अग्नयः) यज्ञार्हाः (उप द्यवि) उपस्वर्गे प्राप्त स्वर्गे (पृथक्) नाना-
प्रकारेण (यतन्ते) यत्नं कुर्वन्ति ॥ २ ॥ ॐ यज्ञान इत्यस्य गोतम ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता—
मैत्रावरुणस्य पुरोरुक् अयंवामित्यस्याः (७,९) स्थाने **मंत्रार्थः**— यज्ञाग्निं स्तौति हे (अग्ने) (नः) अस्माकम्

हरयो धूमकेतवो वातजूता उप द्यवि। यतन्ते वृथगग्नयः ॥ २ ॥ यज्ञा नो मित्रा वरुणा यज्ञा देवाँ२ ॥ ऋतम्बृहत्। अग्ने यक्षि स्वन्दमम् ॥ ३ ॥ युक्ष्वा हि देवहूतमाँ२ ॥ अश्वाँ ॥ अग्ने रथीरिव। नि होता पूर्व्यः सदः ४

(मित्रा वरुणा) मित्रा वरुणौ देवौ (आयज) (देवान्) (यज) (बृहत्) महत् (ऋतम्) यज्ञस्वरूपम् (स्वम्) (दमम्) गृहम्
(यक्षि) यज ॥ ३ ॥ **अथाध्यात्मम्**— (अग्ने) हे आत्माग्ने (नः) अस्माकं (मित्रावरुणा) प्राणो दानौ। प्राणोदा
नौ मित्रावरुणौ ३।२।२।१३ (आयज) (देवान्) इन्द्रियाणि (यज) (बृहत्) महत् (ऋतम्) यज्ञस्वरूपम् (स्वम्)
(दमम्) गृहं भूतात्मानम् (यक्षि) यज ॥ ३ ॥ आश्विन गृहस्य पुरोरुक् यावां कशेत्यस्याः (७,११) स्थाने व्याख्या
ता (१३,३७) ॐ होरूप इत्यस्य कुत्स ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो मार्गो देवते ॥ भक्त पुरोरुक् तं प्रत्नथेत्यस्याः (७,१२)

१२७९ स्थाने मंत्रार्थः-(अन्या)[१] (अन्यो)[२] (विरूपे)[३] पृथग्रूपे (स्वर्थे)[४] (सु) अमृतं मोक्षः (व) दिव्यविषयोर्थौ ययोस्ते (द्वे)[५] रात्र्यहनी पितृयान देवयान मार्गरूपे (वत्सम्)[६] जीवात्मानं (उपधापयेते)[७] क्षीरं पाययतः (चरतः)[८] निरन्तरं प्रवर्त्तेते (अन्यस्याम्)[९] पितृयानरूपायां रात्रौ (हरिः)[१०] चन्द्रमा (स्वधावान्)[११] अन्नवान् (भवति)[१२] (अन्यास्याम्)[१३] देवयानरूपाहनि (शुक्रः)[१४] सूर्यः। एष वै शुक्रो य एष तपति श० ४।३।१।२६ (सुवर्चाः)[१५] मोक्ष एव तेजो यस्य सः (ददृशे)[१६] दृश्यते॥५॥

मन्थिग्रहपुरोरुक् अयं वेन इत्यस्याः (७,१६) स्थाने। व्याख्याना (३,१५) ॐ त्रीण्यन्यस्य विश्वामित्र ऋषिस्त्रिष्टुप्-

द्वेविरूपेचरतःस्वर्थेऽअन्यान्यावत्समुपधापयेते। हरिरन्यस्याम्भवति
स्वधावाञ्छुक्रोऽअन्यस्यान्ददृशेसुवर्चाः॥५॥ अयमिहप्रथमोधायिधा
तृभिर्होतायजिष्ठोऽअध्वरेष्वीड्यः। यमप्नवानोभृगवोविरुरुचुर्वनेषुचित्रं
छन्दोऽग्निर्देवता- विभ्वंविशेविशे॥६॥

आग्रयणग्रहस्य पुरोरुक् ये देवास इति (७,१९) स्थाने मंत्रार्थः-(त्री)[१] त्रीणि (सहस्राणि)[२] (त्रीणि)[३] (शता)[४] शतानि (त्रिंशत्)[५] (च)[६] (नव)[७] (देवाः)[८] (अग्निम्)[९] अग्निमात्मानमग्निम्वा (असपर्यन्)[१०] परिचरन्ति ते (घृतैः)[११] घृतैरिन्द्रियैर्वा। प्राणाः पयः शीर्षस्तत्प्राणं श० ६।५।४।१५ (औक्षन्)[१२] अग्निमसिञ्चयन्। उक्ष सेचने लुङ् (अस्मै)[१३] अग्नये (बर्हिः)[१४] बर्हिः प्राणम्वा (अस्तृणन्)[१५] आच्छादयन् (आदित्)[१६] अनन्तरमेव (होतारम्)[१७] होतारं वा चन्द्रमा (न्यसादयन्त)[१८] होत्रे कर्म्मणि नियुक्तवन्तः॥७॥ मन्थिवदेव ध्रुवग्रहपुरोरुक् (व्याख्याता ७, २४)-

ॐअग्निरित्यस्य भरद्वाजऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता— ऐन्द्राग्नग्रहपुरोरुक् इन्द्राग्नी आगतमित्यस्याः (७,३१)
स्थाने **मंत्रार्थः** (समिद्धः) दीप्तः (शुक्रः) शुद्धः (आहुतः) निमंत्रितः (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (द्रविणस्युः)
हविर्लक्षणं धनमात्मप्रतिविंबं वा समिच्छन्। सुप् आत्मनः क्यच् क्याच्छन्दसीति क्यजन्ताद् उ प्रत्ययः (विपन्यया) विविधया पूजया। पनतिरर्चतिकर्मा (वृत्राणि) पापानि (जङ्घनत्) अत्यर्थं हन्ति। यङ्लुगन्तम् ॥ ९॥
ॐविश्वेभिरित्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता—

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रि॒ꣳशच्च देवा नव चासपर्यन्। औक्षन्घृतैरस्तृणन्बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥ ७ ॥ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥ ८ ॥

वैश्वदेवग्रहपुरोरुक् ओमास श्चर्षणीत्यस्याः (७,३३) स्थाने—
मंत्रार्थः— हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा त्वं (मित्रैः) महानारायणस्य (धामभिः) तेजोरूपैः (विश्वेभिः) सर्वैर्देवैः (इन्द्रेण) (वायुना) सह (सोम्यम्) सोममयम् मम प्रतिविंब सम्बन्धिनं वा (मधु) (आपिब) ॥ १० ॥
ॐआयादित्यस्य पराशरऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता— मरुत्वतीयग्रहपुरोरुक् इन्द्र मरुत्व इत्यस्याः (७,३५) स्थाने ॥ **मंत्रार्थः**— (यत्) यदा (इषे) वृष्ट्यै (निषक्तम्) देवतोद्देशेनाग्नौ सिक्तं हुतम् (शुचि) मंत्रसं-

[OrderDescription]
,CREATED=13.12.19 15:10
,TRANSFERRED=2019/12/13 at 15:25:35
,PAGES=82
,TYPE=STD
,NAME=S0002338
,Book Name=M-2247-SHRI SHUKAL YAJUVED BRAHAMBHASYA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF

FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF

FILE36=00000036.TIF
,FILE37=00000037.TIF
,FILE38=00000038.TIF
,FILE39=00000039.TIF
,FILE40=00000040.TIF
,FILE41=00000041.TIF
,FILE42=00000042.TIF
,FILE43=00000043.TIF
,FILE44=00000044.TIF
,FILE45=00000045.TIF
,FILE46=00000046.TIF
,FILE47=00000047.TIF
,FILE48=00000048.TIF
,FILE49=00000049.TIF
,FILE50=00000050.TIF
,FILE51=00000051.TIF
,FILE52=00000052.TIF
,FILE53=00000053.TIF
,FILE54=00000054.TIF
,FILE55=00000055.TIF
,FILE56=00000056.TIF
,FILE57=00000057.TIF

FILE58=00000058.TIF
,FILE59=00000059.TIF
,FILE60=00000060.TIF
,FILE61=00000061.TIF
,FILE62=00000062.TIF
,FILE63=00000063.TIF
,FILE64=00000064.TIF
,FILE65=00000065.TIF
,FILE66=00000066.TIF
,FILE67=00000067.TIF
,FILE68=00000068.TIF
,FILE69=00000069.TIF
,FILE70=00000070.TIF
,FILE71=00000071.TIF
,FILE72=00000072.TIF
,FILE73=00000073.TIF
,FILE74=00000074.TIF
,FILE75=00000075.TIF
,FILE76=00000076.TIF
,FILE77=00000077.TIF
,FILE78=00000078.TIF
,FILE79=00000079.TIF

FILE80=00000080.TIF
,FILE81=00000081.TIF
,FILE82=00000082.TIF
,